नित्य नियम पूजा

नित्य नियम पूजा

Topic	--	Page#
नवकार (णमोकार) मंत्र	-	4
श्री मंगलाष्टक स्तोत्रं	-	5
स्तुति : तुमतरणतारण	-	7
दर्शनपाठ(तुमनिरखत)	-	9
जलाभिषेकपाठ	-	11
विनयपाठ	-	13
मंगलपाठ	-	15
भजन : मैंथानेपूजनआयो	-	15
पूजाविधिप्रारम्भ	-	16
स्वस्ति (मंगल)	-	18
चतुर्विंशतितीर्थंकरस्वस्तिमंगलविधान	-	18
अथपरमर्षिस्वस्तिमंगलविधान	-	19
समुच्चयपूजाS	-	20
श्रीदेव-शास्त्र-गुरुपूजा(कविश्रीयुगलजी)	-	24
अथदेव-शास्त्र-गुरुपूजा	-	29
श्रीपार्श्वनाथ-जिनपूजा	-	34
श्रीपार्श्वनाथ-जिनपूजा - पुष्पेन्दु	-	38
श्रीअहिच्छत्र-पार्श्वनाथ-जिनपूजा	-	42
श्रीमहावीर-जिनपूजा (श्रीवीरमहा-अतिवीर)	-	48
समुच्चय चौबीसी पूजा	-	52
श्रीचंद्रप्रभजिनपूजातिजारा	-	56
अर्घ्य	-	62
समुच्चयमहार्घ्य	-	65
शांति-पाठ	-	67
विसर्जन-पाठ	-	68
स्तुति (प्रभुपतितपावन)	-	69
स्तुति : मैंतुमचरण-कमलगुणगाय	-	70
आरतीश्रीपार्श्वनाथजी	-	71
आरतीश्रीवर्द्धमानस्वामी	-	72
आरती श्री पंच-परमेष्ठी	-	73

नवकार (णमोकार) मंत्र

ॐ जय! जय! जय!।
नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥

चत्तारिमंगलं अरिहंतामंगलं, सिद्धामंगलं,
साहूमंगलं, केवलपण्णत्तोधम्मोमंगलं।
चत्तारिलोगुत्तमा, अरिहंतालोगुत्तमा, सिद्धालोगुत्तमा,
साहूलोगुत्तमा, केवलिपण्णत्तोधम्मोलोगुत्तमो।
चत्तारिसरणंपव्वज्जामिअरिहंतेसरणंपव्वज्जामि,
सिद्धेसरणंपव्वज्जामि, साहूसरणंपव्वज्जामि,
केवलिपण्णत्तंधम्मंसरणंपव्वज्जामि॥

एसोपंच-णमोयारो, सव्व-पावप्पणासणो।
मंगलाणंचसव्वेसिं, पढमंहवइमंगलम्॥
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

श्री मंगलाष्टक स्तोत्रं

मंगलं भगवान् वीरो, मंगलं गौतमो गणी।
मंगलं कुन्दकुन्दा–चार्यो, जैन–धर्मोऽस्तु मंगलं।।

श्रीमन्–नम्र–सुरा–सुरेन्द्र–मुकुट–प्रद्योत–रत्न–प्रभा–,
भास्वत्–पाद–नखे–न्दवः प्रवचनाम्–भोधी–न्दवः स्थायिनः।
ये सर्वे जिन–सिद्ध–सूर्य–नु–गतास्–ते पाठकाः साधवः,
स्तुत्याः योगि–जनैश्च पंच–गुरवः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।1।।

सम्यग्–दर्शन–बोध–वृत्त–ममलं रत्न–त्रयं पावनं,
मुक्ति–श्री–नगरा–धि–नाथ–जिन–पत्–युक्तो–ऽपवर्ग–प्रदः।
धर्मः सूक्ति–सुधा च चैत्य–मखिलं चैत्या–लयं श्र्या–लयं,
प्रोक्तं च त्रि–विधं चतुर्–विध–ममी कुर्वन्तु ते मंगलम्।।2।।

नाभेया–दि–जिना–धि–पास्–त्रि–भुवन–ख्याताश्–चतुर्–विंशतिः,
श्री–मन्तो भरते–श्वर–प्रभृतयो ये चक्रिणो द्वादश।
ये विष्णु–प्रति–विष्णु–लांगल–धराः सप्तो–त्तराः विंशतिः,
त्रै–काल्ये प्र–थितास्–त्रि–षष्टि–पुरुषाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।3।।

देव्यो–ऽष्टौ च जया–दिकाः द्वि–गुणिताः विद्या–दिकाः देवताः,
श्री–तीर्थं–कर–मातृकाश्–च जनकाः यक्षाश्–च यक्ष्यस्–तथा।
द्वा–त्रिंशत्–त्रि–दशा–धि–पास्–तिथि–सुरा दिक्–कन्यकाश्–चा–ष्ट–धा,
दिक्–पालाः दश चे–त्यमी सुर–गणाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।4।।

ये सर्वो–षध–ऋद्धयः सु–तपसो वृद्धिं–गताः पंच ये,
ये चा–ष्टांग–महा–निमित्त–कुशला ये–ऽष्टा विधाश्–चारणाः।
पंच–ज्ञान–धरास्–त्रयो–ऽपि बलिनो ये बुद्धि–ऋद्धी–श्वराः,
सप्तै–ते सकला–र्चिताः गण–भृतः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।5।।

ज्योतिर्–व्यंतर–भावना–मर–गृहे मेरौ कुला–द्रौ स्थिताः,
जम्बू–शाल्मलि–चैत्य–शाखिषु तथा वक्षार–रूप्या–द्रिषु।
इष्वा–कार गिरौ च कुण्डल–नगे द्वीपे च नन्दी–श्वरे,

शैले ये मनुजो–त्तरे जिन–गृहाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।6।।
कैलासे वृषभस्य निर्–वृति–मही वीरस्य पावा–पुरे,
चम्पायां वसु–पूज्य–सज्–जिन–पतेः सम्मेद–शैले–ऽर्हताम्।
शेषा–णामपि चो–र्जयन्त–शिखरे नेमी–श्वरस्या–र्हतो,
निर्वाणा–वनयः प्रसिद्ध–विभवाः कुर्वन्तु ते मंगलम्।।7।।

सर्पो हार–लता भवत्–यसि–लता सत्–पुष्प–दामा–यते,
सम्–पद्येत रसा–यनं विषम–पि प्रीतिं वि–धत्ते रिपुः।
देवाः यान्ति वशं प्र–सन्न–मनसः किं वा बहु ब्रू–महे,
धर्मा–दे–व नभोऽपि वर्–षति नगैः, कुर्वन्तु ते मंगलम्।।8।।

यो गर्भा–वतरो–त्सवो भग–वतां जन्मा–भि–षेको–त्सवो,
यो जातः परि–निष्–क्रमेण विभवो यः केवल–ज्ञान–भाक्।
यः कैवल्य–पुर–प्रवेश–महिमा सं–भावितः स्वर्गि–भिः,
कल्या–णानि च तानि पंच सततं कुर्वन्तु ते मंगलम्।।9।।

इत्थं श्री–जिन–मंगला–ष्टक–मिदं सौ–भाग्य–संपत्–प्रदं,
कल्या–णेषु महो–त्सवे–षु सु–धियस्–तीर्थं–करा–णामुषः।
ये श्रृण्–वन्ति पठ–न्ति तैश्च सु–जनैर्–धर्मा–र्थ–कामा–न्विता,
लक्ष्मी–रा–श्रयते व्य–पाय–रहिता निर्–वाण–लक्ष्मी–रपि।।10।।

(इति मंगला–ष्टकं स्तोत्रम्)

स्तुति : तुम तरण तारण

तुम तरण–तारण भव–निवारण, भविक–मन आनंदनो।
श्री–नाभि–नंदन जगत–वंदन, आदि–नाथ नि–रंज–नो।।
तुम आदि–नाथ अनादि सेऊँ, सेय पद–पूजा करूँ।
कैलाश गिरि पर रिषभ जिन–वर, पद–कमल हिरदै धरूँ।।
तुम अजित–नाथ अजीत जीते, अष्ट–कर्म महा–बली।
इह विरद सुन–कर सरन आयो, कृपा कीज्यो नाथ जी।।

तुम चंद्र–वदन सु–चंद्र–लच्छन, चंद्र–पुरि परमे–श्वरो।
महा–सेन–नंदन जगत–वंदन, चंद्र–नाथ जिने–श्वरो।।
तुम शांति पाँच कल्याण पूजों, शुद्ध मन–वच–काय जू।
दुर्–भिक्ष चोरी पाप–नाशन, विघ्न जाय पलाय जू।।
तुम बाल–ब्रह्म विवेक–सागर, भव्य–कमल वि–कास–नो।
श्री–नेमि–नाथ पवित्र दिन–कर, पाप–तिमिर वि–नाश–नो।।
जिन तजी राजुल राज–कन्या, काम–सैन्या वश करी।
चारित्र–रथ चढ़ि होय दूलह, जाय शिव–रमणी वरी।।
कंदर्प दर्प सु–सर्प–लच्छन, कमठ शठ निर्–मद कियो।
अश्व–सेन–नंदन जगत–वंदन, सकल सँघ मं–गल कियो।।
जिन धरी बालक–पणे दीक्षा, कमठ–मान वि–दारकैं।
श्री–पार्श्व–नाथ जिनेंद्र के पद, मैं नमों शिर धार–कैं।।
तुम कर्म–घाता मोक्ष–दाता, दीन जानि दया करो।
सिद्धार्थ–नंदन जगत–वंदन, महा–वीर जिने–श्वरो।।
छत्र तीन सोहैं सुर–नर मोहैं, वीनती अब धारिये।
कर जोड़ सेवक वीन वै प्रभु, आवागमन निवारिये।।
अब होउ भव–भव स्वामि मेरे, मैं सदा सेवक रहों।
कर जोड़ यों वर–दान माँगूँ, मोक्ष–फल जावत लहों।।
जो एक माँहीं एक राजत, एक माँहिं अनेक–नो।
इक अनेक–हिं नाहिं संख्या, नमूँ सिद्ध नि–रंज–नो।।

चौपाई

मैं तुम–चरण–कमल–गुण गाय, बहु–विध भक्ति करी मन लाय।
जनम–जनम प्रभु पाऊँ तोहि, यह सेवा–फल दीजे मोहि।।
कृपा तिहारी ऐसी होय, जामन–मरन मिटावो मोय।
बार–बार मैं विनती करूँ, तुम–सेवा भव–सागर तरूँ।।
नाम लेत सब दुःख मिट जाय, तुम दर्शन देख्या प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तव सेव।।
मैं आयो पूजन के काज, मेरो जन्म सफल भयो आज।
पूजा कर–के नवाऊँ शीष, मुझ अप–राध क्षमहु जग–दीश।।

दोहा

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हारी बान्।
मो गरीब की वीनती, सुन लीज्यो भग–वान्।।
पूजन करते देव की, आदि–मध्य–अव–सान।
सुर–गन के सुख भोग–कर, पावै मोक्ष निदान।।
जैसी महिमा तुम विषैं, और धरै नहिं कोय।
जो सूरज में जोति है, नहिं तारा–गण होय।।
नाथ तिहारे नाम तैं, अघ छिन माँहिं पलाय।
ज्यों दिन–कर परकाश–तैं, अंध–कार वि–नशाय।।
बहुत प्र–शंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत–अ–जान।
पूजा–विधि जानूँ नहीं, सरन राखि भग–वान।।

दर्शन पाठ(तुम निरखत)

तुम निरखत मुझ को मिली, मेरी सम्पत्ति आज।
कहाँ चक्रवर्ती–संपदा, कहाँ स्वर्ग–साम्राज्य।।1।।

तुम वन्दत जिन–देव जी, नित नव–मंगल होय।
विघ्न कोटि तत–छिन टरैं, लहहिं सुजस सब लोय।।2।।

तुम जाने बिन नाथ जी, एक श्वाँस के माहिं।
जन्म–मरण अठ–दस किये, साता पाई नाहिं।।3।।

आप बिना पूजत लहे, दुःख–नरक के बीच।
भूख प्यास पशु–गति सही, कर्यो निरादर नीच।।4।।

नाम उचारत सुख लहै, दर्शन सों अघ जाय।
पूजत पावै देव पद, ऐसे हैं जिन–राय।।5।।

वंदत हूँ जिन–राज मैं, धर उर समता–भाव।
तन–धन जन–जग–जाल तैं, धर वि–राग–ता–भाव।।6।।

सुनो अरज हे नाथ जी, त्रि–भुवन के आ–धार।
दुष्ट कर्म का नाश कर, शीघ्र करो उद्–धार।।7।।

जाँचत हूँ मैं आप सों, मेरे जिय के माहिं।
राग–द्वेष की कल्पना, क्यों हूँ उपजै नाहिं।।8।।

अति–अद्भुत प्रभु–ता लखी, वीत–राग–ता माहिं।
वि–मुख होहिं ते दुःख लहैं, सन्मुख सुखी लखाहिं।।9।।

कल–मल कोटिक नहिं रहैं, निरखत ही जिन–देव।
ज्यों रवि ऊगत जगत् में, हरै तिमिर स्वयमेव।।10।।

परमाणू पुद्गल तणी, परमातम सं–योग।
भई पूज्य सब लोक में, हरै जन्म का रोग।।11।।

कोटि जन्म में कर्म जो, बाँधे हुते अनन्त।
ते तुम–छवि वि–लोक–ते, छिन में हो हैं अन्त।।12।।

आन नृपति किरपा करै, तब कछु दे धन–धान।
तुम प्रभु अपने भक्त को, कर–लो आप–समान।।13।।

यंत्र–मंत्र मणि–औषधी, विष–हर राखत प्रान।
त्यों जिन–छवि सब भ्रम हरै, करैं सर्व परधान।।14।।

त्रि–भुवन–पति हो ताहि तैं, छत्र विराजैं तीन।
सुर–पति नाग–नरेश–पद, रहें चरन आधीन।।15।।

भवि निरखत भव आपनो, तुव भा–मण्डल बीच।
भ्रम मेटैं समता गहै, नाहिं सहै गति नीच।।16।।

दोइ ओर ढोरत अमर, चौंसठ चमर सफेद।
निरखत भवि–जन का हरैं, भव अनेक का खेद।।17।।

तरु अशोक तुव हरत है, भवि–जीवन का शोक।
आकुल–ता कुल मेटि के, करैं निराकुल लोक।।18।।

अन्तर–बाहिर परिगहन, त्यागा सकल समाज।
सिंहासन पर रहत हैं, अन्तरिक्ष जिन–राज।।19।।

जीत भई रिपु–मोह तैं, यश सूचत है तास।
देव दुन्दुभिन के सदा, बाजे बजैं अकाश।।20।।

बिन–अक्षर इच्छा–रहित, रुचिर दिव्य–ध्वनि होय।
सुर–नर–पशु समझैं सबै, संशय रहै न कोय।।21।।

बरसत सुर–तरु के कुसुम, गुंजत अलि चहुँ ओर।
फैलत सुजस सु–वासना, हरषत भवि सब ठौर।।22।।

समुद्र बाघ अरु रोग अहि, अर्गल बँध संग्राम।
विघन विषम सब ही टरैं, सुमरत ही जिन–नाम।।23।।

श्रीपाल, चंडाल, पुनि, अञ्जन, भील कुमार।
हाथी हरि अरि सब तरे, आज हमारी बार।।24।।

'बुधजन' यह विनती करै, हाथ जोड़ शिर नाय।
जब लौं शिव नहिं होय, तुव–भक्ति हृदय अधिकाय।।25।।

जलाभिषेक पाठ

जय–जय भगवंते सदा, मंगल मूल महान्।
वीत–राग सर्वज्ञ प्रभु, नमौं जोरि जुग–पान।।

श्री जिन जग में ऐसो को बुध–वंत जू, जो तुम गुण वरननि करि पावै अंत जू।
इंद्रादिक सुर चार ज्ञान धारी मुनी, कहि न सकै तुम गुण–गण हे त्रि–भुवन–धनी।।
अनुपम अमित तुम गुणनि–वारिधि, ज्यों अ–लोका–काश है,
किमि धरैं हम उर कोष में सो, अ–कथ–गुण–मणि राश है।
पै निज प्रयोजन सिद्धि की तुम, नाम में ही शक्ति है,
यह चित्त में सरधान यातैं, नाम ही में भक्ति है।।1।।

ज्ञाना–वरणी दर्शन–आवरणी भने, कर्म मोहनी अंतराय चारों हने।
लोका–लोक विलोक्यो केवल–ज्ञान में, इंद्रा–दिक के मुकुट नये सुर–थान में।।
तब इन्द्र जान्यो अवधि तैं, उठि सुरन–युत वंदत भयो,
तुम पुन्य को प्रेर्यो हरी ह्वै, मुदित धन–पति सौं चयो।
अब वेगि जाय रचौ सम–व–सृति, सफल सुर–पद को करौ,
साक्षात् श्री अरहंत के दर्शन, करौ कल्मष हरौ।।2।।

ऐसे वचन सुने सुर–पति के धन–पती, चल आयो तत्–काल मोद धारै अती।
वीत–राग छवि देख शब्द जय–जय चयौ, दे प्रदच्छिना बार–बार वंदत भयौ।।
अति–भक्ति–भीनो नम्र–चित्त ह्वै, समव–सरण रच्यौ सही,
ताकी अनूपम शुभ गती को, कहन समरथ कोउ नहीं।
प्राकार तोरण सभा–मण्डप, कनक–मणि–मय छाजहीं,
नग–जड़ित गंध–कुटी मनो–हर, मध्य–भाग वि–राजहीं।।3।।

सिंहा–सन ता मध्य बन्यौ अद्भुत दिपै, ता पर वारिज रच्यौ प्रभा दिन–कर छिपै।
तीन छत्र सिर–शोभित चौंसठ चमर जी, महा–भक्ति–युत ढोरत हैं तहँ अमर जी।।
प्रभु तरन–तारन कमल ऊपर, अन्त–रिक्ष विराजिया,
यह वीत–राग–दशा प्रतच्छ, वि–लोकि भवि–जन सुख लिया।
मुनि आदि द्वादश–सभा के भवि, जीव मस्तक नायकैं,
बहु–भाँति बारं–बार पूजैं, नमैं गुण–गण गायकैं।।4।।

परमौ–दारिक दिव्य–देह पावन सही, क्षुधा–तृषा–चिंता–भय–गद दूषण नहीं।
जन्म–जरा–मृति अरति शोक विस्मय नसे, राग–रोष–निद्रा–मद–मोह सबै ख़से।।
श्रम–बिना श्रम–जल–रहित पावन, अमल ज्योति–स्वरूप जी,
शरणा–गतनि की अ–शुचिता हरि, करत वि–मल अनूप जी।

ऐसे प्रभू की शांति–मुद्रा, को न्हवन जल तैं करैं,
'जस' भक्ति–वश मन–उक्ति तैं, हम भानु–ढिंग दीपक धरैं।।5।।

तुम तौ सहज पवित्र यही निश्चय भयो, तुम पवित्रता हेतु नहीं मज्जन ठयो।
मैं मलीन रागादिक–मल तैं ह्वै रह्यो, महा–मलिन तन में वसु–विधि–वश दुःख सह्यो।।
बीत्यो अनंतो काल यह, मेरी अ–शुचिता ना गई,
तिस अ–शुचिता–हर एक तुम ही, भरहु वांछा चित ठई।
अब अष्ट–कर्म विनाश सब, मल रोष–रागा–दिक हरौ,
तन–रूप कारा–गेह तैं उद्धार शिव–वासा करौ।।6।।

मैं जानत तुम अष्ट–कर्म हरि शिव गये, आवा–गमन–वि–मुक्त राग–वर्जित भये।
पर तथापि मेरो मनो–रथ पूरत सही, नय–प्रमान तैं जानि महा–साता लही।।
पापा–चरण तजि न्हवन करता चित्त में ऐसे धरूँ,
साक्षात् श्री अरहंत का मानों न्हवन परसन करूँ।
ऐसे विमल परि–णाम होते अशुभ नसि शुभ–बंध तैं,
विधि अशुभ नसि शुभ बंध तै ह्वै, शर्म सब विधि तास तैं।।7।।

पावन मेरे नयन, भये तुम दरस तैं, पावन प्रानि भये तुम चरननि परस तैं।
पावन मन ह्वै गयो तिहारे ध्यान तैं, पावन रसना मानी, तुम गुण–गान तैं।।
पावन भई पर–जाय मेरी, भयो मैं पूरण–धनी,
मैं शक्ति–पूर्वक भक्ति कीनी, पूर्ण भक्ति नहीं बनी।
धन धन्य ते बड–भागि भवि तिन, नींव शिव–घर की धरी,
वर क्षीर–सागर आदि जल मणि–कुंभ भर भक्ती करी।।8।।

विघन–सघन–वन–दाहन–दहन प्रचंड हो, मोह–महा–तम–दलन प्रबल मार्तण्ड हो।
ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि संज्ञा धरो, जग–विजयी जम–राज नाश ताको करो।।
आनन्द–कारण दुःख–निवारण, परम–मंगल–मय सही,
मो–सो पतित नहिं और तुम–सो, पतित–तार सुन्यौ नहीं।
चिंता–मणी पारस–कल्प–तरु, एक भव सुख–कार ही,
तुम भक्ति–नवका जे चढ़े, ते भये भव–दधि–पार ही।।9।।

nkgk
तुम भव–दधि तैं तरि गये, भये निकल अ–विकार।
तार–तम्य इस भक्ति को, हमैं उतारो पार।।10।।

विनय पाठ

इह विधि ठाड़ो होय के, प्रथम पढ़े जो पाठ।
धन्य जिने–श्वर देव तुम, नाशे कर्म जु आठ।।1।।

अनंत चतुष्टय के धनी, तुम ही हो सिर–ताज।
मुक्ति–वधू के कंत तुम, तीन भुवन के राज।।2।।

तिहुँ जग की पीड़ा–हरन, भव–दधि–शोषण–हार।
ज्ञायक हो तुम विश्व के, शिव–सुख के कर–तार।।3।।
हरता अघ–अँधि–यार के, करता धर्म–प्रकाश।
थिरता–पद दातार हो, धरता निज–गुण रास।।4।।
धर्मामृत उर जलधि सों, ज्ञान–भानु तुम रूप।
तुमरे चरण–सरोज को, नावत तिहुँ–जग–भूप।।

मैं वन्दौं जिन–देव को, करि अति–निर्मल भाव।
कर्म–बन्ध के छेदने, और न कछू उपाव।।6।।

भवि–जन को भव–कूप तैं, तुम ही काढ़न–हार।
दीन–दयाल अनाथ–पति, आतम–गुण–भंडार।।
चिदा–नन्द निर्मल कियो, धोय कर्म–रज–मैल।
सरल करी या जगत में, भवि–जन को शिव–गैल।।8।।

तुम पद–पंकज पूज तैं, विघ्न–रोग टर जाय।
शत्रु मित्रता को धरैं, विष निर्–विषता थाय।।9।।
चक्री खग–धर इन्द्र–पद, मिलैं आप तैं आप।
अनु–क्रम कर शिव–पद लहैं, नेम सकल हनि पाप।।10।।
तुम बिन मैं व्याकुल भयो, जैसे जल–बिन मीन।
जन्म–जरा मेरी हरो, करो मोहि स्वा–धीन।।11।।
पतित बहुत पावन किये, गिनती कौन करेव।
अंजन से तारे प्रभू, जय–जय–जय जिन–देव।।12।।
थकी नाव भव–दधि विषै, तुम प्रभु पार करेय।
खेवटिया तुम हो प्रभू, जय–जय–जय जिन–देव।।13।।
राग–सहित जग में रुल्यो, मिले सरागी देव।
वीत–राग भेंट्यो अबै, मेटो राग कुटेव।।14।।
कित निगोद कित नारकी, कित तिर्यंच अजान।
आज धन्य मानुष भयो, पायो जिन–वर थान।।15।।

तुमको पूजैं सुर–पती, अहि–पति नर–पति देव।
धन्य भाग्य मेरो भयो, करन लग्यो तुम सेव।।16।।
अ–शरण के तुम शरण हो, निराधार आधार।
मैं डूबत भव–सिन्धु में, खेव लगाओ पार।।17।।
इन्द्रा–दिक गण–पति थके, कर वि–नती भग–वान।
अपनो विरद निहारि–कै, कीजे आप–समान।।18।।
तुम–री नेक सु–दृष्टि तैं, जग उतरत है पार।
हा हा डूबो जात हों, नेक निहार निकार।।19।।

जो मैं कहहूँ और सों, तो न मिटै उर–भार (झार)'।
मेरी तो तोसों (मोपे)' बनी, तातैं करौं पुकार।।20।।

वंदों पाँचों परम–गुरु, सुर–गुरु वंदत जास।
विघन–हरन मंगल–करन, पूरन परम–प्र–काश।।21।।

चौबीसों जिन–पद नमों, नमों शारदा माय।
शिव–मग–साधक साधु नमि, रच्यो पाठ सुख–दाय।।22।।

मंगल पाठ

मंगल मूर्ति परम–पद, पंच धरो नित ध्यान।
हरो अ–मंगल विष्व का, मंगल–मय भग–वान।1।

मंगल जिन–वर पद नमों, मंगल अर्हंत देव।
मंगल–कारी सिद्ध–पद, सो वन्दों स्वयमेव।2।

मंगल आचारज मुनी, मंगल गुरु उव–झाय।
सर्व–साधु मंगल करो, वन्दों मन वच काय।3।

मंगल सरस्वती मात का, मंगल जिन–वर धर्म।
मंगल–मय मंगल–करण, हरो असाता कर्म।4।

या विधि मंगल से सदा, जग में मंगल होत।
मंगल ''नाथूराम'' यह, भव सागर दृढ़ पोत।5।

भजन : मैं थाने पूजन आयो

श्री जी मैं थाने पूजन आयो, मेरी अरज सुनो दीना–नाथ!
श्री जी मैं थाने पूजन आयो।।1।।

जल चन्दन अक्षत शुभ लेके, ता में पुष्प मिलायो।
श्री जी मैं थाने पूजन आयो।।2।।

चरु अरु दीप धूप फल लेकर, सुन्दर अर्घ बनायो।
श्री जी मैं थाने पूजन आयो।।3।।

आठ पहर की साठ जु घड़ियाँ, शान्ति शरण तेरी आयो।
श्री जी मैं थाने पूजन आयो।।4।।

अर्घ बनाय गाय गुण–माला, तेरे चरणन शीष झुकायो।
श्री जी मैं थाने पूजन आयो।।5।।

मुझ सेवक की अर्ज यही है, जन्मन–मरण मिटावो।
मेरो आवा–गमन छुड़ावो, श्री जी मैं थाने पूजन आयो।।6।।

पूजा विधि प्रारम्भ

ॐ जय! जय! जय!।
नमोऽस्तु! नमोऽस्तु! नमोऽस्तु!।
णमो अरिहंताणं, णमो सिद्धाणं, णमो आइरियाणं।
णमो उवज्झायाणं, णमो लोए सव्वसाहूणं॥
ॐ ह्रीं अनादिमूलमंत्रेभ्यो नमः। (पुष्पांजलि क्षेपण करें)

चत्तारि मंगलं, अरहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं,
साहू मंगलं, केवलि–पण्णत्तो धम्मो मंगलं।
चत्तारि लोगुत्तमा, अरहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा,
साहू लोगुत्तमा, केवलि–पण्णत्तो धम्मो लोगुत्तमो।।

चत्तारि सरणं पव्वज्जामि, अरहंते सरणं पव्वज्जामि,
सिद्धे सरणं पव्वज्जामि, साहू–सरणं पव्वज्जामि।
केवलि–पण्णत्तं धम्मं सरणं पव्वज्जामि,
ॐ नमोऽर्हते स्वाहा, पुष्पा–ञ्जलिं क्षिपामि।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सुस्थितो दुःस्थितोऽपि वा।
ध्यायेत् पंच–नमस्कारं सर्व–पापैः प्र–मुच्यते।।

अपवित्रः पवित्रो वा, सर्वा–वस्थां गतोऽपि वा।
यः स्मरेत् परमा–त्मानं, स बाह्या–भ्यन्तरे शुचिः।।

अपरा–जित–मन्त्रोऽयं सर्व–विघ्न–वि–नाशनः।
मंगलेषु च सर्वेषु प्रथमं मंगलं मतः।।

एसो पंच–णमोक्कारो, सव्व–पावप्प–णासणो।
मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं होइ मंगलं।।

अर्हम्–इत्यक्षरं ब्रह्म–वाचकं परमे–ष्ठिनः।
सिद्ध–चक्रस्य सद्–बीजं, सर्वतः प्र–णमाम्य–हम्।।

कर्मा–ष्टक–वि–निर्–मुक्तं मोक्ष–लक्ष्मी–नि–केतनम्।
सम्यक्त्वा–दि–गुणो–पेतं सिद्ध–चक्रं नमाम्य–हम्।।

विघ्नौघाः प्रलयं यान्ति शाकिनी–भूत–पन्नगाः।
विषं निर्विषतां याति स्तूयमाने जिनेश्वरे।।
पुष्पा–ञ्जलिं क्षिपामि।।

पंच कल्याणक अर्घ्य

उदक–चन्दन–तन्दुल–पुष्पकैश्–चरु–सुदीप–सुधूप–फलार्घ्य–कैः।
धवल–मंगल–गान–रवा–कुले जिन–गृहे जिन–कल्याण–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री–भगवज्–जिनस्य गर्भ–जन्म–तप–ज्ञान–मोक्षा–दि–पंच–कल्याण–केभ्योऽर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पंचपरमेष्ठी का अर्घ्य

उदक–चन्दन–तन्दुल–पुष्पकैश्–चरु–सुदीप–सुधूप–फला–र्घ्य–कैः।
धवल–मंगल–गान–रवा–कुले जिन–गृहे जिन–इष्ट–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री–अरहंत–सिद्ध–आचार्य–उपाध्याय–सर्व–साधु–आदि–पंच–परमे–ष्ठिभ्योऽर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

श्री जिनसहस्रनाम का अर्घ्य

उदक–चन्दन–तन्दुल–पुष्पकैश्–चरु–सुदीप–सुधूप–फला–र्घ्य–कैः।
धवल–मंगल–गान–रवा–कुले, जिन–गृहे जिन–नाम–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री–भगवज्–जिनस्य–अष्टा–धिक–सहस्र–नामेभ्योऽर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

श्री जिन–वाणी का अर्घ्य

उदक–चन्दन–तन्दुल–पुष्पकैश्–चरु–सुदीप–सुधूप–फला–र्घ्य–कैः।
धवल–मंगल–गान–रवाकुले, जिन–गृहे जिन–वाणि–महं यजे।।

ॐ ह्रीं श्री–जिन–मुखो–द्भव–द्वादशां–ग–जिन–वाणी–देव्यै प्रथमा–नुयोग–द्रव्या–नुयोग–चरणा–नुयोग–करणा–नुयोग–सहितायै अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

स्वस्ति (मंगल)

श्रीमज्–जिनेन्द्र–मभि–वन्द्य जगत्–त्रयेशं, स्याद्वाद–नायक–मनन्त–चतुष्टया–र्हम्।
श्री–मूल–संघ–सुदृशां सु–कृतै–क–हेतुर्–, जैनेन्द्र–यज्ञ–विधि–रेष मयाऽभ्य–धायि।।

स्वस्ति त्रिलोक–गुरवे जिन–पुंगवाय, स्वस्ति स्वभाव–महिमो–दय–सु–स्थिताय।
स्वस्ति प्रकाश–सहजो–र्ज्जित–दृङ्मयाय, स्वस्ति प्रसन्न–ललिता–द्भुत–वैभवाय।।

स्वस्त्यु–च्छलद्–विमल–बोध–सुधा–प्लवाय, स्वस्ति स्व–भाव–पर–भाव–वि–भास–काय।
स्वस्ति त्रि–लोक–विततै–क–चिदु–द्गमाय, स्वस्ति त्रि–काल–सकला–यत–विस्तृताय।।

द्रव्यस्य शुद्धिम–धि–गम्य यथा–नु–रूपं, भावस्य शुद्धि–म–धि–काम–धि–गन्तु–कामः।
आ–लम्बनानि विविधा–न्य–व–लम्ब्य वल्गान्, भूतार्थ–यज्ञ–पुरुषस्य करोमि यज्ञम्।।
अर्हन्–पुराण–पुरुषो–त्तम–पावनानि, वस्तून्य–नूनम–खिलान्य–यमे–क एव
अस्मिञ्–ज्वलद्–विमल–केवल–बोध–वह्नौ। पुण्यं समग्र–म–हमे–क–मना जुहोमि।।
इति नित्य–पूजा समा–प्यते। पुष्पां–जलिं क्षिपामि।। इत्या–शीर्–वादः ।।

चतुर्विंशति तीर्थंकरस्वस्ति मंगल विधान

श्री–वृषभो नः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–अजितः। श्री–सम्भवः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–अभि–नन्दनः।

श्री–सुमतिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–पद्म–प्रभः। श्री–सुपार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–चन्द्र–प्रभः।

श्री–पुष्प–दन्तः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–शीतलः। श्री–श्रेयान् स्वस्ति, स्वस्ति श्री–वासु–पूज्यः।

श्री–विमलः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–अनन्तः। श्री–धर्मः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–शान्तिः।

श्री–कुन्थुः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–अर–नाथः। श्री–मल्लिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–मुनि–सुव्रतः।

श्री–नमिः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–नेमि–नाथः। श्री–पार्श्वः स्वस्ति, स्वस्ति श्री–वर्द्ध–मानः।
पुष्पां–जलिं क्षिपामि।। इत्या–शीर्वादः।।

अथ परमर्षिस्वस्ति मंगल विधान

नित्या–प्रकम्पाद्–भुत–केवलौघाः, स्फुरन्–मनः–पर्यय–शुद्ध–बोधाः।
दिव्या–वधि–ज्ञान–बल–प्रबोधाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।1।।
कोष्ठ–स्थ–धान्यो–पममे–क–बीजं, संभिन्न–संश्रोतृ–पदानुसारि।
चतुर्–विधं बुद्धि–बलं दधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।2।।

सं–स्पर्शनं सं–श्रवणञ्–च दूराद्, आ–स्वादन–घ्राण–वि–लोकनानि।
दिव्यान्–मति–ज्ञान–बलाद्–वहन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।3।।
प्रज्ञा–प्रधानाः श्रमणाः समृद्धाः, प्रत्येक–बुद्धाः दश–सर्व–पूर्वैः।
प्रवादिनोऽष्टांग–निमित्त–विज्ञाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।4।।

जङ्घा–नल–श्रेणि–फला–म्बु–तन्तु–प्रसून–बीजां–कुर–चारणा–ह्वाः।
नभोऽङ्गण–स्वैर–वि–हारिणश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।5।।

अणिम्नि दक्षाः कुशलाः महिम्नि, लघिम्नि शक्ताः कृतिनो गरिम्णि।
मनो–वपुर्–वाग्–बलिनश्च नित्यं, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।6।।

स–काम–रूपित्व–वशित्व–मै–श्यं, प्राकाम्य–मन्तर्द्धि–म–थाप्ति–मा–प्ताः।
तथाऽप्रतीघात–गुण–प्रधानाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।7।।
दीप्तं च तप्तं च तथा महो–ग्रं, घोरं तपो घोर–पराक्रम–स्थाः।
ब्रह्मा–परं घोर–गुणं चरन्तः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।8।।

आमर्ष–सर्वौ–षधयस्–तथा–शीर्–र्विषा–विषा–दृष्टि–विषा–विषाश्च।
सखिल्ल–विड्–जल्ल–मलौ–षधीशाः, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।9।।

क्षीरं स्रवन्तोऽत्र घृतं स्रवन्तः, मधुं स्रवन्तोऽप्य–मृतं स्रवन्तः।
अ–क्षीण–संवास–महानसाश्च, स्वस्ति क्रियासुः परमर्षयो नः।।10।।

पुष्पां–जलिं क्षिपामि।। इत्या–शीर्वादः।।

समुच्चय पूजा

दोहा

देव–शास्त्र–गुरु नमन करि, बीस तीर्थं–कर ध्याय।
सिद्ध शुद्ध राजत सदा, नमूँ चित्त हुल–साय।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–समूह! श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–कर–समूह!
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमे–ष्ठिन्–समूह! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–समूह! श्री–विद्य.मान–विंशति–तीर्थं–कर–समूह!
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिन्–समूह! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्था–पनम्।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–समूह! श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–कर–समूह!
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिन्–समूह!
अत्र मम सन्–निहितो भव–भव वषट् सन्–निधि–करणं।

अनादि–काल से जग में स्वामिन्, जल से शुचिता को माना,
शुद्ध निजा–तम सम्यक् रत्न–त्रय–निधि को नहिं पहिचाना।
अब निर्मल रत्न–त्रय जल ले, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थं–कर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य.मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः जन्म–जरा–मृत्यु–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

भव–आताप मिटावन की, निज में ही क्षम–ता सम–ता है,
अन–जाने अब तक मैंने, पर में की झूठी मम–ता है।
चन्दन–सम शीतल–ता पाने, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थं–कर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्यमान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः भवा–ताप–वि–नाश–नाय चंदनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

अक्षय–पद के बिन फिरा, जगत की लख चौरासी योनी में,
अष्ट–कर्म के नाश करन को, अक्षत तुम ढिंग लाया मैं।
अक्षय निधि निज की पाने को, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थं–कर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पुष्प सुगन्धी से आतम ने शील–स्वभाव नशाया है,
मन्मथ–वाणों से बिंध करके, चहुँ गति दुःख उपजाया है।
स्थिरता निज में पाने को, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थं–कर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः
काम–बाण–वि–ध्वंस–नाय पुष्पं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

षट्–रस–मिश्रित भोजन से, ये भूख न मेरी शांत हुई,
आतम–रस अनुपम चखने से, इन्द्रिय मन इच्छा शमन हुई।
सर्वथा भूख के मेटन को, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः
क्षुधा–रोग–वि–नाशनाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जड़ दीप वि–नश्वर 21ा`अब तक, समझा था मैंने उजियारा,
निज–गुण–दरशायक ज्ञान–दीप से, मिटा मोह का अँधियारा।
ये दीप समर्पित करके मैं, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थं–कर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः
मोहा–न्ध–कार–वि–नाष–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

ये धूप अनल में खेने से, कर्मों को नहीं जलाएगी,
निज में निज की शक्ति–ज्वाला, जो राग–द्वेष नशाएगी।
उस शक्ति दहन प्रगटाने को, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य.मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः
अष्ट–कर्म–दह–नाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पिस्ता बदाम श्री–फल लवंग, चरणन तुम ढिंग मैं ले आया,
आतम–रस भीने निज–गुण–फल, मम मन अब उनमें ललचाया।
अब मोक्ष महा–फल पाने को, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थं–कर, सिद्ध प्रभू जी के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

अष्टम वसुधा पाने को, कर में ये आठों द्रव्य लिये,
सहज शुद्ध स्वाभाविक–ता से, निज में निज गुण प्रगट किये।
ये अर्घ्य समर्पण करके मैं, श्री देव–शास्त्र–गुरु को ध्याऊँ,
विद्य–मान श्री बीस तीर्थंकर, सिद्ध प्रभू के गुण गाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जयमाला

दोहा

देव–शास्त्र–गुरु, बीस जिन, सिद्ध अनन्तानंत।
गाऊँ गुण–जय–मालिका, भव–दुख नसे अनन्त।।
नसे घातिया कर्म अर्हंत देवा, करें सुर–असुर नर–मुनी नित्य सेवा।
दरश–ज्ञान–सुख–बल अनन्त के स्वामी, छियालीस गुण–युत महा–ईश नामी।।

तेरी दिव्य वाणी सदा भव्य मानी, महा–मोह–वि–ध्वंस–नी मोक्ष–दानी।
अनेकान्त–मय द्वादशांगी बखानी, नमौं लोक–माता श्री जैन वाणी।।
वि–रागी अचारज उवज्झाय साधू, दरश ज्ञान भण्डार समता अराधू।
नगन–वेश–धारी सु–एका–विहारी, निजा–नन्द–मण्डित मुकति–पथ प्रचारी।।
विदेह–क्षेत्र में तीर्थंकर बीस राजें, विहरमान वंदूँ सभी पाप भाजें।
नमूँ सिद्ध निर्भय निरामय सु–धामी, अनाकुल–समाधान सहजा–भिरामी।

छंद

देव–शास्त्र–गुरु बीस तीर्थं–कर, सिद्ध हृदय बिच धर ले रे।
पूजन–ध्यान–गान–गुण करके, भव–सागर जिय तर ले रे।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरुभ्यः, श्री–विद्य–मान–विंशति–तीर्थं–करेभ्यः,
श्री–अनंता–नंत–सिद्ध–परमेष्ठिभ्यः

जयमाल–पूर्णा–र्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

श्री जिन के प्रसाद तैं, सुखी रहें सब जीव।
या तैं तन–मन–वचन तैं, सेवों भव्य सदीव।।
पुष्पां–जलिं क्षिपामि।। इत्या–शीर्वादः।।

भूत–भविष्यत्–वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य–चैत्यालय कृत्रिम–अकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–त्रिकाल–सम्–बन्धिते–भ्यः विंशत्य–धिक–सप्त–शते–भ्यः त्रि.लोक–स्थे–भ्यः
कृत्रिम–अकृत्रिम–चैत्या–लये–भ्यः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

चैत्य–भक्ति–आलोचन चाहूँ, कायो–त्सर्ग अघ–नाशन हेतु,
कृत्रिम–अकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन–बिम्ब अनेक।
चतुर' निकाय के देव जजें, ले अष्ट द्रव्य निज–भक्ति–समेत,
निज शक्ती अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिव–खेत।।

ॐ ह्रीं श्री–कृत्रिम–अकृत्रिम–चैत्यालय–स्थ–जिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पूर्व–मध्य–अपराह्न की बेला, पूर्वा–चार्यों के अनुसार,
देव–वंदना करूँ भाव से, सकल कर्म की नाशन–हार।
पंच महा–गुरु सुमिरन करके, कायो–त्सर्ग करूँ सुख–कार,
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा अब मैं भव पार।।
पुष्पां–जलिं क्षिपामि।। इत्या–शीर्वादः।।

श्री देव - शास्त्र–गुरु–पूजा (कवि श्रीयुगलजी)

केवल–रवि–किरणों से जिसका, सम्पूर्ण प्रकाशित है अंतर।
उस श्री जिन–वाणी में होता, तत्त्वों का सुन्दर–तम दर्शन।।
सद्–दर्शन–बोध–चरण–पथ पर, अ–विरल जो बढ़ते हैं मुनि–गण।
उन देव–परम–आगम गुरु को, शत–शत वंदन शत–शत वंदन।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु समूह! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट् (आह्वानम्)।
ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु समूह! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठः! ठः! (स्थापनम्)।
ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु समूह! अन मम सन्निहितो भव! भव! वषट्! (सन्निधि–करणम्)।

इन्द्रिय के भोग मधुर विष–सम, लावण्य–मयी कंचन काया।
यह सब–कुछ जड़ की क्रीड़ा है, मैं अब तक जान नहीं पाया।।
मैं भूल स्वयं के वैभव को, पर–ममता में अटकाया हूँ।
अब निर्मल सम्यक्–नीर लिये, मिथ्या–मल धोने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः जन्म–जरा–मृत्यु–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जड़–चेतन की सब परि–णति प्रभु! अपने–अपने में होती है।
अनु–कूल कहें प्रति–कूल कहें, यह झूठी मन की वृत्ति है।।
प्रति–कूल संयोगों में क्रोधित, होकर संसार बढ़ाया है।
संतप्त–हृदय प्रभु! चंदन–सम, शीतलता पाने आया है।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः संसार–ताप–वि–नाश–नाय चन्दनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

उज्ज्वल हूँ कुंद–धवल हूँ प्रभु! पर से न लगा हूँ किंचित् भी।
फिर भी अनु–कूल लगें उन पर, करता अभि–मान निरंतर ही।।
जड़ पर झुक–झुक जाता चेतन, नश्वर वैभव को अपनाया।
निज शाश्वत अक्षय निधि पाने, अब दास चरण रज में आया।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतान् निर्–वपामी–ति स्वाहा।

यह पुष्प सुकोमल कितना है! तन में माया कुछ शेष नहीं।
निज–अंतर का प्रभु भेद कहूँ, उसमें ऋजुता का लेश नहीं।।
चिंतन कुछ फिर सम्भाषण कुछ, क्रिया कुछ की कुछ होती है।
स्थिरता निज में प्रभु पाऊँ, जो अंतर–कालुष धोती है।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः काम–बाण–वि–ध्वंस–नाय पुष्पाणि निर्–वपामी–ति स्वाहा।

अब तक अगणित जड़–द्रव्यों से, प्रभु! भूख न मेरी शांत हुई।
तृष्णा की खाई खूब भरी, पर रिक्त रही वह रिक्त रही।।
युग–युग से इच्छा–सागर में, प्रभु! गोते खाता आया हूँ।
पंचेन्द्रिय–मन के षट्–रस तज, अनुपम–रस पीने आया हूँ।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः क्षुधा–रोग–वि–नाश–नाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जग के जड़ दीपक को अब तक, समझा था मैंने उजियारा।
झंझा के एक झकोरे में, जो बनता घोर तिमिर कारा।।
अतएव प्रभो! यह नश्वर–दीप, समर्पण करने आया हूँ।
तेरी अंतर लौ से निज, अंतर–दीप जलाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः मोहां–धकार–वि–नाश–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जड़–कर्म घुमाता है मुझ–को, यह मिथ्या–भ्रांति रही मेरी।
मैं राग–द्वेष किया करता, जब परि–णति होती जड़ केरी।।
यों भाव–करम या भाव–मरण, सदियों से करता आया हूँ।
निज–अनुपम गंध–अनल से प्रभु, पर–गंध जलाने आया हूँ ।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः अष्ट–कर्म–दहनाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जग में जिसको निज कहता मैं, वह छोड़ मुझे चल देता है।
मैं आकुल–व्या–कुल हो लेता, व्या–कुल का फल व्या–कुलता है।।
मैं शांत निरा–कुल चेतन हूँ, है मुक्ति–रमा सहचरि मेरी।
यह मोह तड़क कर टूट पड़े, प्रभु! सार्थक फल पूजा तेरी।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

क्षण–भर निज–रस को पी चेतन, मिथ्या–मल को धो देता है ।
काषायिक भाव विनष्ट किये, निज–आनंद अमृत पीता है।।
अनुपम–सुख तब विलसित होता, केवल–रवि जग–मग करता है।
दर्शन–बल पूर्ण प्रकट होता, यह ही अरहन्त–अवस्था है।।
यह अर्घ्य समर्पण करके प्रभु! निज–गुण का अर्घ्य बनाऊँगा।
औ' निश्चित तेरे सदृश प्रभु! अरिहन्त–अवस्था पाऊँगा।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जयमाला

भव–वन में जी–भर घूम चुका, कण–कण को जी भर–भर देखा।
मृग–सम मृग–तृष्णा के पीछे, मुझ को न मिली सुख की रेखा ।।1।।

झूठे जग के सपने सारे, झूठी मन की सब आशाएँ।
तन जीवन यौवन अ–स्थिर हैं, क्षण भंगुर पल में मुरझाएँ ।।2।।

सम्राट महा–बल सेनानी, उस क्षण को टाल सकेगा क्या।
अ–शरण मृत काया में हर्षित, निज जीवन डाल सकेगा क्या।।3।।

संसार महा–दुःख–सागर के, प्रभु! दुःख–मय सुख–आभासों में ।
मुझ को न मिला सुख क्षण–भर भी, कंचन–कामिनि–प्रासादों में ।।4।।

मैं एकाकी एकत्व लिए, एकत्व लिए सब ही आते।
तन–धन को साथी समझा था, पर वे भी छोड़ चले जाते।।5।।

मेरे न हुए ये मैं इनसे, अति–भिन्न अ–खंड निराला हूँ।
निज में पर से अन्यत्व लिये, निज सम–रस पीने वाला हूँ।।6।।

जिसके श्रृंगारों में मेरा, यह महँगा जीवन घुल जाता।
अत्यन्त अशुचि जड़ काया से, इस चेतन का कैसा नाता।।7।।

दिन–रात शुभा–शुभ भावों से, मेरा व्यापार चला करता।
मानस वाणी अरु काया से, आस्रव का द्वार खुला रहता।।8।।

शुभ और अशुभ की ज्वाला से, झुलसा है मेरा अंत–स्थल।
शीतल समकित किरणें फूटें, संवर से जागे अंतर्–बल।।9।।

फिर तप की शोधक वह्नि जगे, कर्मों की कड़ियाँ टूट पड़ें।
सर्वांग निजात्म प्रदेशों से, अमृत के निर्झर फूट पड़ें।।10।।

हम छोड़ चलें यह लोक तभी, लोकां–त विराजे क्षण में जा।
निज–लोक हमारा वासा हो, शोकांत बनें फिर हमको क्या।।11।।

जागे मम दुर्लभ बोधि प्रभो! दुर्नय–तम सत्वर टल जावे।
बस ज्ञाता–दृष्टा रह जाऊँ, मद–मत्सर मोह विनश जावे।।12।।

चिर रक्षक धर्म हमारा हो, हो धर्म हमारा चिर साथी।
जग में न हमारा कोई था, हम भी न रहें जग के साथी।।13।।

चरणों में आया हूँ प्रभु–वर! शीतल–ता मुझको मिल जावे।
मुरझाई ज्ञान–लता मेरी, निज–अंतर्–बल से खिल जावे।।14।।

सोचा करता हूँ भोगों से, बुझ जावेगी इच्छा–ज्वाला।
परिणाम निकलता है लेकिन, मानों पावक में घी डाला।।15।।

तेरे चरणों की पूजा से, इन्द्रिय–सुख की ही अभिलाषा।
अब तक न समझ ही पाया प्रभु! सच्चे सुख की भी परिभाषा।।16।।

तुम तो अ–विकारी हो प्रभुवर! जग में रहते जग से न्यारे।
अतएव झुकें तव चरणों में, जग के माणिक–मोती सारे।।17।।

स्याद्वाद–मयी तेरी वाणी, शुभ–नय के झरने झरते हैं।
उस पावन नौका पर लाखों, प्राणी भव–वारिधि तिरते हैं।।18।।

हे गुरुवर! शाश्वत सुख–दर्शक, यह नग्न–स्वरूप तुम्हारा है।
जग की नश्वरता का सच्चा, दिग्दर्श कराने वाला है।।19।।

जब जग विषयों में रच–पच कर, गाफिल निद्रा में सोता हो।
अथवा वह शिव के निष्कंटक–पथ में विष–कंटक बोता हो।।20।।

हो अर्ध–निशा का सन्नाटा, वन में वन–चारी चरते हों।
तब शांत निरा–कुल मानस तुम, तत्त्वों का चिंतन करते हो ।।21।।

सम करते तप शैल नदी–तट पर, तरु–तल वर्षा की झड़ियों में।
समता–रस पान किया करते, सुख–दुःख दोनों की घड़ियों में।।22।।

अंतर–ज्वाला हरती वाणी, मानों झड़ती हों फुल–झड़ियाँ।
भव–बंधन तड़–तड़ टूट पड़ें, खिल जावें अंतर की कलियाँ।।23।।

तुम–सा दानी क्या कोई हो, जग को दे दी जग की निधियाँ।
दिन–रात लुटाया करते हो, सम–शम की अ–वि–नश्वर मणियाँ।।24।।

हे निर्मल देव! तुम्हें प्रणाम, हे ज्ञान–दीप आगम! प्रणाम।
हे शांति–त्याग के मूर्तिमान, शिव–पथ–पंथी गुरुवर! प्रणाम।।

ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः अनर्घ्य–पद–प्राप्तये जय–माला–पूर्णार्घ्यं
निर्–वपामी–ति स्वाहा।

सिद्ध-पूजा का अर्घ्य

जल–फल वसु–वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा।
मेटो भव–फंदा सब दुःख–दंदा, 'हीरा–चंदा' तुम वंदा।।
त्रि–भुवन के स्वामी त्रि–भुवन–नामी, अंतर–यामी अभि–रामी।
शिव–पुर–वि–श्रामी निज–निधि पामी, सिद्ध जजामी सिर–नामी।।

ॐ ह्रीं श्री–अनाहत–पराक्रमाय सर्व–कर्म–वि–निर्–मुक्ताय सिद्ध–चक्रा–धि–पतये सिद्ध–परमेष्ठिने
अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जल–फल आठों दरव, अरघ कर प्रीति धरी है, गणधर इन्द्रनि हू तैं, थुति पूरी न करी है।
'द्यानत' सेवक जानके (हो), जग तें लेहु निकार।। सीमं–धर जिन आदि दे बीस विदेह–मँझार।
श्री जिन–राज हो, भवि–तारण–तरण जहाज (श्री महाराज हो)।।

ॐ ह्रीं श्री–सीमं–धर–युग–मंधर–बाहु–सु–बाहु–सं–जात–स्वयं–प्रभ– ऋषभा–नन
अनन्त–वीर्य–सूर्य–प्रभ–विशाल–कीर्ति–वज्र–धर–चन्द्रा–नन–
भद्र–बाहु–भुजंगम–ईश्वर–नेमिप्रभ–वीरसेन–महाभद्र–देवयश–अजित–वीर्य इति विदेह–क्षेत्रे
विद्यमान–विंशति–तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

(जोगीरासा छन्द)

भूत–भविष्यत्–वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य–चैत्यालय कृत्रिम–अकृत्रिम, तीन लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री–त्रिकाल–सम्–बन्धिते–भ्यः विंशत्य–धिक–सप्त–शते–भ्यः त्रि.लोक–स्थे–भ्यः कृत्रिम–अकृत्रिम–चैत्या–लये–भ्यः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

चैत्य–भक्ति–आलोचन चाहूँ, कायो–त्सर्ग अघ–नाशन हेतु,
कृत्रिम–अकृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन–बिम्ब अनेक।
चतुर' निकाय के देव जजें, ले अष्ट द्रव्य निज–भक्ति–समेत,
निज शक्ती अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिव–खेत।।

ॐ ह्रीं श्री–कृत्रिम–अकृत्रिम–चैत्यालय–स्थ–जिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पूर्व–मध्य–अपराह्न की बेला, पूर्वा–चार्यों के अनुसार,
देव–वंदना करूँ भाव से, सकल कर्म की नाशन–हार।
पंच महा–गुरु सुमिरन करके, कायो–त्सर्ग करूँ सुख–कार,
सहज स्वभाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा अब मैं भव पार।।

पुष्पा–ञ्जलिं क्षिपामि, इत्या–शीर्–वादः।

अथ देव-शास्त्र-गुरु पूजा

(अडिल्ल छन्द)

प्रथम देव अर–हंत सु–श्रुत सिद्धा–न्त जू,
गुरु निर–ग्रंथ महंत मुकति–पुर–पंथ जू।

तीन रतन जग–माहिं सो ये भवि ध्याइये,
तिन की भक्ति–प्रसाद परम–पद पाइये।।1।।

पूजों पद अर–हंत के पूजों गुरु–पद–सार।
पूजों देवी सर–स्वती नित–प्रति अष्ट प्रकार।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–समूह! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।
ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–समूह! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्था–पनम्।
ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–समूह! अत्र मम सन्–निहितो भव–भव वषट् सन्–निधि–करणं।

(गीता छन्द)

सुर–पति उरग–नर–नाथ तिन करि वन्द–नीक सु–पद–प्रभा,
अति–शोभ–नीक सु–वरण उज्–ज्वल देख छवि मोहित सभा।
वर नीर क्षीर–समुद्र घट भरि अग्र तसु बहु–विधि नचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

मलिन वस्तु हर लेत सब, जल–स्वभाव मल–छीन।
जासों पूजों परम–पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।1।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यो जन्म–जरा–मृत्यु–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जे त्रि–जग–उदर मँझार प्रानी तपत अति–दुर्द्धर खरे ,
तिन अ–हित–हरन सु–वचन जिन के परम शीतल–ता भरे।
तसु भ्रमर–लोभित घ्राण–पावन सरस चन्दन घिसि सचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

चंदन शीतल–ता करै, तपत वस्तु पर–वीन।
जासों पूजों परम–पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।2।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः भवा–ताप–वि–नाश–नाय चन्दनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।2।।

यह भव–समुद्र अ–पार तारण के निमित्त सु–विधि ठई,
अति–दृढ़ परम–पावन जथा–रथ भक्ति वर नौका सही।
उज्–ज्वल अ–खंडित सालि तंदुल पुंज धरि त्रय–गुण जचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

तंदुल सालि सु–गंधि अति, परम अ–खंडित बीन।
जासों पूजों परम–पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।3।।

ॐ ह्री श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।3।।

जे विनय–वंत सु–भव्य–उर–अंबुज–प्रकाशन भान हैं,
जे एक–मुख चारित्र भाषत त्रि–जग–माहिं प्रधान हैं।
लहि कुंद–कमला–दिक पुहुप भव–भव कु–वेदन सों बचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

वि–विध भाँति परि–मल सुमन भ्रमर जास आधीन।
जासों पूजों परम–पद देव–शास्त्र–गुरु तीन।।4।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः काम–बाण–वि–ध्वंस–नाय पुष्पं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।4।।

अति–सबल मद–कंदर्प जाको क्षुधा–उरग अ–मान हैं,
दुस्सह भया–नक तासु नाशन को सु–गरुड–समान हैं।
उत्तम छहों रस–युक्त नित नैवेद्य करि घृत में पचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

नाना विध संयुक्त–रस व्यंजन सरस नवीन।
जासों पूजों परम–पद देव शास्त्र गुरु तीन।।5।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यः क्षुधा–रोग–वि–नाश–नाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।5।।

जे त्रि–जग–उद्यम–नाश कीने मोह–तिमिर महा–बली,
तिहि कर्म–घाती ज्ञान–दीप–प्रकाश–जोति प्रभा–वली।
इह भाँति दीप प्रजाल कंचन के सु–भाजन में खचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

स्व–पर–प्रकाशक जोति अति, दीपक तम करि हीन।
जासों पूजों परम–पद, देव शास्त्र गुरु तीन।।6।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यो मोहा–न्ध–कार–वि–नाश–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।6।।

जो कर्म–ईंधन दहन अग्नि–समूह सम उद्धत लसै,
वर धूप तासु सु–गंधि–ता करि सकल परि–मल–ता हँसै।
इह भाँति धूप चढ़ाय नित भव–ज्वलन माहिं नहीं पचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।

अग्नि माँहिं परि–मल दहन, चंदना–दि गुण लीन।
जासों पूजों परम–पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।7।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यो अष्ट–कर्म–दह–नाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।7।।

लोचन सु–रसना घ्रान उर उत्साह के कर–तार हैं ।
मोपै न उपमा जाय वरणी सकल फल गुण–सार हैं।
सो फल चढ़ा–वत हर्ष–पूरन परम अमृत–रस सचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।
जे प्रधान फल–फल विषैं, पंच–करण–रस–लीन।
जासों पूजों परम–पद, देव–शास्त्र–गुरु तीन।।8।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरु–भ्यो मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।8।।

जल परम उज्–ज्वल गंध अक्षत, पुष्प चरु दीपक धरूँ,
वर धूप निर्–मल फल वि–विध बहु जनम के पातक हरूँ।
इह भाँति अर्घ्य चढ़ाय नित भवि करत शिव–पंकति मचूँ,
अर–हंत श्रुत–सिद्धा–न्त गुरु–निर्–ग्रंथ नित पूजा रचूँ।।
वसु–विधि अर्घ सँजोय कै अति–उछाह मन कीन।
जासों पूजों परम–पद देव शास्त्र गुरु तीन।।9।।

ॐ ह्रीं श्री देव–शास्त्र–गुरुभ्यो अनर्घ्य–पद–प्राप्तये–अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा

जयमाला

देव–शास्त्र–गुरु रतन शुभ, तीन रतन करतार।
भिन्न–भिन्न कहुँ आरती, अल्प–सु–गुण–विस्तार।।

(पद्धरि छन्द)

चउ कर्म की त्रेसठ प्रकृति नाशि, जीते अष्टा–दश दोष–राशि।
जे परम सु–गुण हैं अनं–त धीर, कह–वत के छ्यालिस गुण गँभीर।।
शुभ सम–व–सरण–शोभा अपार, शत इंद्र नमत कर सीस धार।
देवा–धि–देव अर–हंत देव, वंदों मन–वच–तन करि सु–सेव।।
जिन की धुनि है ओंकार–रूप, निर–अक्षर–मय महिमा अनूप।
दश–अष्ट महा–भाषा समेत, लघु–भाषा सात शतक सु–चेत।।
सो स्याद्वाद–मय सप्त–भंग, गण–धर गूँथे बारह सु–अंग।
रवि–शशि न हरै सो तम हराय, सो शास्त्र नमों बहु–प्रीति ल्याय।।

गुरु आचारज–उवझाय–साधु, तन नगन रतन–त्रय–निधि अ–गाधु।
संसार–देह वै–राग्य धार, निर–वांछि तपैं शिव–पद नि–हार।।
गुण छत्तिस पच्चिस आठ–बीस, भव–तारन–तरन जिहाज ईस।
गुरु की महिमा वरनी न जाय, गुरु नाम जपों मन–वचन–काय।।

(सोरठा)

कीजे शक्ति–प्रमान शक्ति–बिना सरधा धरै।
'द्यानत' सरधा–वान अ–जर–अ–मर–पद भोगवै।।
ॐ ह्रीं श्री–देव–शास्त्र–गुरु–भ्यो पूर्णा–र्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

(दोहा)

श्री–जिन के परसाद तें, सुखी रहें सब जीव ।
या तें तन–मन–वचन तें, सेवो भव्य सदीव।।
।। पुष्पा–ञ्जलिं क्षिपामि, इत्या–शीर्–वादः।।

सिद्ध-पूजा का अर्घ्य

जल–फल वसु–वृंदा अरघ अमंदा, जजत अनंदा के कंदा।
मेटो भव–फंदा सब दुःख–दंदा, 'हीरा–चंदा' तुम वंदा।।
त्रिभुवन के स्वामी त्रिभुवन–नामी, अंतर्–यामी अभि–रामी।
शिव–पुर–विश्रामी निज–निधि पामी, सिद्ध जजामी सिर–नामी।।
ॐ ह्रीं श्री अनाहत–पराक्रमाय सर्व–कर्म–वि–निर्–मुक्ताय सिद्ध–चक्रा–धि–पतये सिद्ध–परमेष्ठिने अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्य निर्–वपामी–ति स्वाहा । 9।

विद्यमान बीस तीर्थंकरों का अर्घ्य

जल–फल आठों दरव, अरघ कर प्रीति धरी है,
गण–धर इन्द्रनि हू तैं, थुति पूरी न करी है।
'द्यानत' सेवक जानके (हो), जग तें लेहु निकार।।
सीमंधर जिन आदि दे बीस विदेह–मँझार।
श्री जिन–राज हो, भवि–तारण–तरण जहाज (श्री महाराज हो)।।
ॐ ह्रीं श्री सीमं–धर–युग–मंधर–बाहु–सु–बाहु–सं–जात–स्वयं–प्रभ– ऋषभा–नन अनन्तवीर्य–सूर्य–प्रभ–विशाल–कीर्ति–वज्र–धर–चन्द्रा–नन– भद्र–बाहु–भुजं–गम ईश्वर–नेमि–प्रभ–वीर–सेन–महा–भद्र–देव–यश– अजित–वीर्य इति विदेह–क्षेत्रे विद्यमान–विंशति–तीर्थंकरेभ्यो नमः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

(जोगीरासा छन्द)

भूत–भविष्यत्–वर्तमान की, तीस चौबीसी मैं ध्याऊँ।
चैत्य–चैत्या–लय कृत्रिमा–कृत्रिम, तीन–लोक के मन लाऊँ।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल–सम्बन्धी तीस चौबीसी, त्रिलोक–सम्बन्धी कृत्रिमा–कृत्रिम चैत्य– चैत्या–लयेभ्यः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

चैत्य–भक्ति आलोचन चाहूँ कायो–त्सर्ग अघ–नाशन हेत।
कृत्रिमा–कृत्रिम तीन लोक में, राजत हैं जिन–बिम्ब अनेक।।
चतुर–निकाय के देव जजैं, ले अष्ट–द्रव्य निज–भक्ति समेत।
निज–शक्ति अनुसार जजूँ मैं, कर समाधि पाऊँ शिव–खेत।।

ॐ ह्रीं त्रिकाल–सम्बन्धी समस्त–कृत्रिमा–कृत्रिम–चैत्यालय–सम्बन्धी जिन–बिम्बेभ्यः अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पूर्व–मध्य–अपराह्न की बेला, पूर्वा–चार्यों के अनुसार।
देव–वंदना करूँ भाव से, सकल–कर्म की नाशन–हार।।
पंच महा–गुरु सुमिरन करके, कायो–त्सर्ग करूँ सुख–कार।
सहज स्व–भाव शुद्ध लख अपना, जाऊँगा अब मैं भव–पार।।

(पुष्पांजलिं क्षेपण कर नौ बार णमोकार मंत्र जपें)

श्री–पार्श्वनाथ–जिन–पूजा

वर स्वर्ग प्राणत तैं विहाय सुमात वामा–सुत भये,
अश्वसेन के पारस जिनेश्वर चरण जिनके सुर नये।
नौ हाथ उन्नत तन विराजै उरग–लक्षण पग लसैं,
थापूँ तुम्हें जिन आय तिष्ठो कर्म मेरे सब नसैं।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानम्।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्र! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्था–पनम्।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्र! अत्र मम सन्–नि–हितो भव–भव वषट् सन्–निधि–करणम्।

(गीता छन्द)

क्षीर सोम के समान अम्बु–सार लाइए,
हेम–पात्र धार–के सु आप को चढ़ाइए।
पार्श्व–नाथ देव सेव आपकी करूँ सदा,
दीजिए निवास मोक्ष भूलिए नहीं कदा।।टेक।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

चन्दनादि केसरादि स्वच्छ गन्ध लीजिए,
आप चर्न चर्च मोह–ताप को हनीजिए।। पार्श्व–नाथ देव....।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय भवा–ताप–वि–नाश–नाय चन्दनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

फेन चन्द के समान अक्षतान लाइकैं,
चरण के समीप सार पुंज को रचाइ–कैं।। पार्श्व–नाथ देव.....।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

केवड़ा गुलाब और केतकी चुनाइ–कैं,
धार चर्ण के समीप काम को नसाइ–कैं।। पार्श्व–नाथ देव.....।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय काम–बाण–वि–ध्वंस–नाय पुष्पं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

घेवरादि बावरादि मिष्ट सद्य में सनें,
आप चर्ण–चर्च ते क्षुधादि–रोग को हनें।। पार्श्व–नाथ देव.....।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय क्षुधा–रोग–वि–नाश–नाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

लाय रत्न–दीप को सनेह–पूर के भरूँ,
वातिका कपूर बारि मोह–ध्वान्त को हरूँ।। पार्श्व–नाथ देव.....।।
ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय मोहा–न्ध–कार–वि–नाश–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

धूप गन्ध लेय–के सु–अग्नि–संग जारिए,
तास धूप के सु–संग अष्ट–कर्म बारिए।। पार्श्व–नाथ देव....।।
ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अष्ट–कर्म–वि–ध्वंश–नाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।7।।

खारकादि चिर–भटादि रत्न–थार में भरूँ,
हर्ष धार–के जजूँ सु–मोक्ष–सौख्य को वरूँ।। पार्श्व –नाथ देव.....।।
ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

नीर–गन्ध–अक्षतान् पुष्प–चारु लीजिए,
दीप–धूप–श्री–फलादि–अर्घ तैं जजीजिए।। पार्श्व–नाथ देव....।।
ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पंच कल्याणक-अर्घ्यावली

शुभ प्राणत स्वर्ग विहाये, वामा माता उर आये।
वैशाख तनी दुति कारी, हम पूजें विघ्न–निवारी।।
ॐ ह्री वैशाख–कृष्ण–द्वितीयायां गर्भ–कल्याण–क–प्राप्ताय श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जन्मे त्रि–भुवन–सुख–दाता, कलि–कादशि पौष विख्याता।
स्यामा–तन अद्भुत राजे, रवि–कोटिक तेज सु लाजे।।
ॐ ह्रीं पौष–कृष्णै–कादशम्यां जन्म–कल्याण–क–प्राप्ताय श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

कलि पौष इकादशि आई, तब बारह भावना भाई।
अपने कर लौंच सु–कीना, हम पूजें चर्न (चरण) जजीना।।
ॐ ह्रीं पौष–कृष्णै–कादशम्यां तपः–कल्याण–क–प्राप्ताय श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

कलि चैत चतुर्थी आई, प्रभु केवल–ज्ञान उपायी।
तब प्रभु उप–दश जु कीना, भवि–जीवन को सुख दीना।।

वह कमठ जीव दुःख–कारी, उप–सर्ग कियो अति–भारी।
प्रभु केवल–ज्ञान उपाया, कलि चैत चौथ दिन गाया।।

ॐ ह्री चैत्र–कृष्ण–चतुर्थ्यां ज्ञान–कल्याण–क–प्राप्ताय श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

सित सातैं सावन आई, शिव–नारि वरी जिन–राई।
सम्मेदा–चल हरि माना, हम पूजैं मोक्ष–कल्याना।।

ॐ ह्री श्रावण–शुक्ल–सप्तम्यां मोक्ष–कल्याण–क–प्राप्ताय श्री–पार्श्व–नाथ–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जयमाला

पारस–नाथ जिने–न्द्र तने वच पौन भखी जरतें सुन पाये,
कर्‌यो सरधान लह्‌यो पद आन भये पद्मावति–शेष कहाये।

नाम प्रताप टरे सन्ताप सु–भव्यन को शिव–शर्म दिखाये,
हो विश्वसेन के नन्द भले गुण गावत हैं तुमरे हरषाये।।
केकी–कण्ठ समान छवि, वपु उतंग नव हाथ।
लक्षण उरग निहार पग, बन्दूँ पारस–नाथ।।

(छन्द मत्तगयन्द)

रची नगरी छह मास अगार, बने चहुँ गोपुर शोभ अपार।
सु कोट तनी रचना छवि देत, कँगूरन पै लहकैं बहु केत।।
बनारस की रचना जु अपार, करी बहु भाँति धनेश तैयार।
तहाँ विश्वसेन नरेन्द्र उदार, करैं सुख वाम सु दे पटनार।।
तजो तुम प्राणत नाम विमान, भये तिनके घर नन्दन आन।
तबै सुर इन्द्र नियोगनि आय, गिरिन्द्र करी विधि न्हौन सु जाय।।
पिता घर सौंप गये निज धाम, कुबेर करै वसु जाम सु काम।
बढ़ैं जिन दूज मयंक समान, रमैं बहु बालक निर्जर आन।।

भये जब अष्टम वर्ष कुमार, धरे अणुव्रत्त महा–सुख–कार।
पिता जब आन करी अरदास, करो तुम ब्याह वरो मम आस।।
करी तब नाहिं रहे जग–चन्द, किये तुम काम–कषाय जु मन्द।
चढ़े गज–राज कुमार–न संग, सु देखत गंग तनी सु–तरंग।।
लख्यो इक रंक करै तप घोर, चहूँ दिस अग्नि बलै अति–जोर।
कहे जिन–नाथ अरे सुन भ्रात, करे बहु–जीवन की मत घात।।
भयो तब कोप कहै कित जीव, जले तब नाग दिखाय स–जीव।

लख्यो यह कारण भावन भाय, नये दिव–ब्रह्म–ऋषी सुर आय।।
तबहिं सुर चार प्रकार नियोग, धरी शिविका निज–कन्ध मनोग।
करो वन माँहिं निवास जिनन्द, धरे व्रत चारित आनँद–कन्द।।
गहे तहाँ अष्टम के उप–वास, गये धनदत्त तने जु अवास।
दियो पय–दान महा–सुख–कार, भई पण–वृष्टि तहाँ तिहँ वार।।
गये तब कानन माँहिं दयाल, धरो तुम योग सबहिं अघ टाल।
तबै वह धूम सुकेत अयान, भयो कमठा–चर को सुर आन।।
करै नभ गौन लखे तुम धीर, जू पूरब बैर विचार गहीर।
करो उप–सर्ग भयानक घोर, चली बहु तीक्षण पवन झकोर।।
रहो दश हूँ दिश में तम छाय, लगी बहु अग्नि लखी नहिं जाय।
सु–रुण्डन के बिन मुण्ड दिखाय, पड़े जल मूसल धार अथाय।।
तबै पद्मावति कन्त धनिन्द, नये युग आय तहाँ जिन–चन्द।
भगो तब रंक सु देखत हाल, लहो तब केवल–ज्ञान विशाल।।
दियो उप–देश महा–सुख–कार, सु–भव्यन बोधि समेद पधार।
सुवर्ण–भद्र जहँ कूट प्रसिद्धि, वरी शिव–नारि लही वसु ऋद्धि।।
जजूँ तुम चरण दोऊ कर जोर, प्रभू लखिये अब ही मम ओर।
कहैं 'बखतावर रत्न' बनाय, जिनेश हमें भव–पार लगाय।।

(घत्ता)

जय पारस–देवं, सुर–कृत–सेवं, वन्दत चरण सु–नाग–पती।
करुणा के धारी, पर–उप–कारी, शिव–सुख–कारी कर्म–हती।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिन–न्द्राय पूर्णा–र्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जो पूजै मन लाय, भव्य पारस प्रभु नित ही,
ताके दुःख सब जाँय, भीति व्यापहि नहिं कित ही।

सुख–सम्पति अधि–काय, पुत्र–मित्रा–दिक सारे,
अनुक्रम सों शिव लहें, 'रतन' इम कहें पुकारे।।

पुष्पा–ञ्जलिं–क्षिपामि, इत्या–शीर्–वादः।

श्री–पार्श्वनाथ–जिन–पूजा

(श्री पुश्पेन्दु जी)

हे पार्श्व–नाथ! हे अश्व–सेन–सुत! करुणा–सागर तीर्थं–कर।
हे सिद्ध–शिला के अधि–नायक! हे ज्ञान–उजागर तीर्थंकर।।

हम ने भावुक–ता में भर कर, तुम को हे नाथ! पुकारा है।
प्रभु–वर! गाथा की गंगा से, तुम ने कितनों को तारा है।।

हम द्वार तुम्हारे आये हैं। करुणा कर नेक निहारो तो।
मेरे उर के सिंहासन पर, पग धारो नाथ! पधारो तो।।

ॐ ह्रीं श्री–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट् आह्वानम्

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ! ठः! ठः! स्थापनम्

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र! अत्र मम सन्–निहितो भव! भव! वषट्! सन्निधि–करणम्।

¼NUn½

मैं लाया निर्मल जल–धारा, मेरा अंतर निर्मल कर दो।
मेरे अंतर को हे भग–वान! शुचि–सरल भावना से भर दो।।

मेरे इस आकुल–अंतर को, दो शीतल सुख–मय शांति प्रभो।
अपनी पावन अनुकम्पा से, हर लो मेरी भव–भ्रान्ति प्रभो।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय जन्म–जरा–मृत्यु–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।1।

प्रभु! पास तुम्हारे आया हूँ, भव–भव–सं–ताप सताया हूँ।
तव पद–चर्चन के हेतु प्रभो! मलया–गिरि चंदन लाया हूँ।।

अपने पुनीत चरणा–म्बुज की, हम को कुछ रेणु प्रदान करो।
हे संकट–मोचन तीर्थं–कर! मेरे मन के सं–ताप हरो।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय संसार–ताप–वि–नाश–नाय चंदनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।2।

प्रभु–वर ! क्षण–भंगुर वैभव को, तुम ने क्षण में ठुकराया है।
निज तेज तपस्या से तुम ने, अभि–नव अक्षय पद पाया है।।

अक्षय हों मेरे भक्ति–भाव, प्रभु–पद की अक्षय प्रीति मिले।
अक्षय प्रतीति रवि–किरणों से, प्रभु मेरा मानस–कुंज खिले।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतान् निर्–वपामी–ति स्वाहा।3।

यद्यपि शत–दल की सुषमा से, मानस–सर शोभा पाता है।
पर उस के रस में फँस मधु–कर, अपने प्रिय–प्राण गँवाता है।।

हे नाथ आप के पद–पंकज, भव–सागर पार लगाते हैं।
इस हेतु आप के चरणों में, श्रद्धा के सुमन चढ़ाते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय काम–बाण–विध्वंस–नाय पुष्पं निर्–वपामी–ति स्वाहा।4।

व्यंजन के विविध समूह प्रभो! तन की कुछ क्षुधा मिटाते हैं।
चेतना की क्षुधा मिटाने में प्रभु! ये अ–सफल रह जाते हैं।।

इनके आ–स्वादन से प्रभु! मैं संतुष्ट नहीं हो पाया हूँ।
इस हेतु आप के चरणों में, नैवेद्य चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय क्षुधा–रोग–वि–नाश–नाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।5।

प्रभु! दीपक की मालाओं से, जग–अंध–कार मिट जाता है।
पर अंतर्–मन का अंध–कार, इन से न दूर हो पाता है।।

यह दीप सजा कर लाये हैं, इनमें प्रभु! दिव्य प्रकाश भरो।
मेरे मानस–पट पर छाये, अज्ञान–तिमिर का नाश करो।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय मोहां–ध–कार–वि–नाश–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।6।

यह धूप सु–गन्धित द्रव्य–मयी, नभ–मंडल को महकाती है।
पर जीवन–अघ की ज्वाला में, ईंधन बन कर जल जाती है।।

प्रभु–वर! इसमें वह तेज भरो, जो अघ को ईंधन कर डाले।
हे वीर विजेता कर्मों के! हे मुक्ति–रमा वरने वाले।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अष्ट–कर्म–दह–नाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।7।

यों तो ऋतु–पति ऋतु–फल से, उप–वन को भर जाता है।
पर अल्प–अवधि का ही झोंका, उन को निष्फल कर जाता है।।

दो सरस–भक्ति का फल प्रभु–वर! जीवन–तरु तभी सफल होगा।
सहजा–नंद–सुख से भरा हुआ, इस जीवन का प्रति–फल होगा।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।8।

पथ की प्रत्येक विषम–ता को, मैं समता से स्वीकार करूँ।
जीवन–विकास के प्रिय–पथ की, बाधाओं का परिहार करूँ।।

मैं अष्ट–कर्म–आ–वरणों का, प्रभु–वर! आतंक हटाने को।
वसु–द्रव्य संजा`कर लाया हूँ, चरणों में नाथ! चढ़ाने को।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।9।

पंचकल्याणक – अर्घ्यावली

वामा–देवी के गर्भ में, आये दीना–नाथ।
चिर–अनाथ जगती हुई, सजग–स–मोद–स–नाथ।।

(गीता छन्द)

अ–ज्ञान–मय इस लोक में, आलोक–सा छाने लगा।
होकर मुदित सुर–पति नगर में, रत्न बरसने लगा।।
गर्भ–स्थ बालक की प्रभा, प्रति–भा प्रकट होने लगी।
नभ से निशा की कालिमा, अभि–नव उषा धोने लगी।।

ॐ ह्रीं वैशाख–कृष्ण–द्वितीयायां गर्भ–मंगल–मंडिताय
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।1।

द्वार–द्वार पर सज उठे, तोरण वंदन–वार।
काशी नगरी में हुआ, पार्श्व–प्रभु अव–तार।।

प्राची दिशा के अंग में, नूतन–दिवा–कर आ गया।

भवि–जन जलज विकसित हुए, जग में उजाला छा गया।।
भग–वान् के अभि–षेक को, जल क्षीर–सागर ने दिया।
इन्द्रा–दि ने है मेरु पर, अभि–षेक जिन–वर का किया।।

ॐ ह्रीं पौष–कृष्णै–कादश्यां जन्म–मंगल–मंडिताय
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।2।

निरख अ–थिर संसार को, गृह–कुटुम्ब सब त्याग।
वन में जा दीक्षा धरी, धारण किया वि–राग।।

निज–आत्म–सुख के स्रोत में, तन्मय प्रभू रहने लगे।

उप–सर्ग और परी–षहों को, शांति से सहने लगे।।
प्रभु की बिहार–वन–स्थली, तप से पुनीता हो गई।
कपटी कमठ–शठ की कुटिल–ता, भी वि–नीता हो गई।।

ॐ ह्रीं पौष–कृष्णै–कादश्यां तपो–मंगल–मंडिताय
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।3।

आत्मज्योति से हट गये, तम के पटल महान।
प्रकट प्रभाकर–सा हुआ, निर्मल केवल ज्ञान।।

देवेन्द्र द्वारा विश्वहित, सम–अवसरण निर्मित हुआ।

समभाव से सबको शरण का, पंथ निर्देशित हुआ।।
था शांति का वातावरण, उसमें न विकृत विकल्त थे।
मानों सभी तब आत्महित के, हेतु कृत–संकल्प थे।।

ॐ ह्रीं चैत्र कृष्ण–चतुर्थी–दिने केवल–ज्ञान–प्राप्तये
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।4।

युग–युग के भव–भ्रमण से, देकर जग को त्राण।
तीर्थं–कर श्री पार्श्व–नाथ ने, पाया पद–निर्वाण।।

निर्लिप्त, आज नितांत है, चैतन्य कर्म–अभाव से।

है ध्यान–ध्याता–ध्येय का, किंचित् न भेद स्वभाव से।।
तव पाद–पद्यों की प्रभु, सेवा सतत पाते रहें।
अक्षय असीमा–नंद का, अनु–राग अपनाते रहें।।

ॐ ह्रीं श्रावण–शुक्ल–सप्तम्यां मोक्ष–मंगल–मंडिताय
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।5।

वंदना-गीत

अना–दि–काल से कर्मों का मैं सताया हुँ। इसी से आप के दरबार आज आया हूँ।।
न अपनी भक्ति न गुण–गान का भरोसा है। दया–निधान श्री भग–वान् का भरोसा है।।
इक आस लेकर आया हूँ कर्म कटाने के लिए। भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।1।।
जल न चंदन और अक्षत पुष्प भी लाया नहीं। है नहीं नैवेद्य'दीप अरु धूप–फल पाया नहीं।।
हृदय के टूटे हुए उद्–गार केवल साथ हैं। और भेंट के हित अर्घ्य सजवाया नहीं।।
है यही फल–फूल जो समझो चढ़ाने के लिए। भेंट में कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।2।।
माँगना यद्यपि बुरा समझा किया मैं उम्र–भर। किन्तु अब जब माँगने पर बाँध–कर आया कमर।।
और फिर सौभाग्य से जब आप–सा दानी मिला। तो भला फिर माँगने में आज क्यों रक्खूँ कसर।।
प्रार्थना है आप ही जैसा बनाने के लिए। भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।3।।
यदि नहीं यह दान देना आप को मंजूर है। और फिर कुछ माँगने से दास ये मजबूर है।।
किन्तु मुँह–माँगा मिलेगा मुझ को ये विश्वास है। क्योंकि लौटाना न इस दरबार का दस्तूर है।।
प्रार्थना है कर्म–बंधन से छुड़ाने के लिए। भेंट मै कुछ भी लाया नहीं चढ़ाने के लिए।।4।।
हो न जब तक माँग पूरी नित्य सेवक आएगा। आप के पद–कंज में 'पुष्पेन्दु' शीश झुकायेगा।।
है प्रयोजन आप को यद्यपि न मेरी भक्ति से । किन्तु फिर भी नाथ मेरा तो भला हो जाएगा।।
आपका क्या जायेगा बिगड़ी बनाने के लिए। भेंट मैं कुछ भी नहीं लाया चढ़ाने के लिए।।5।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय जय–माला–पूर्णा–र्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जो पूजे मन लाय भव्य पारस प्रभु नित ही। ताके दुःख सब जाय भीति व्यापे नहिं कित ही।।
सुख–संपति अधि–काय पुत्र–मित्रा–दिक सारे। अनु–क्रम–सों शिव लहे, 'रत्न' इमि कहें पुकारे।।
।। इत्या–शीर्वादः पुष्पा–ंजलिं क्षिपेत्।।

श्री अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिन पूजा

हे! पार्श्व–नाथ करुणा–निधान महिमा महान् मंगल–कारी।
शिव–भर्तारी सुख–भंडारी सर्वज्ञ सुखारी त्रि–पुरारी।।

तुम धर्म–सेत करुणा–निकेत आनंद–हेत अतिशय–धारी।
तुम चिदा–नंद आ–नंद–कंद दुःख–द्वंद–फंद संकट–हारी।।

आवाहन करके आज तुम्हें अपने मन में पधाराऊँगा।
अपने उर के सिंहा–सन पर गद्–गद हो तुम्हें बिठाऊँगा।।

मेरा निर्मल–मन टेर रहा हे नाथ! हृदय में आ जाओ।
मेरे सूने मन–मंदिर में पारस भग–वान् समा जाओ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट् आह्वानम्
ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ! ठः! ठः! स्थापनम्
ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
अत्र मम सन्–निहितो भव! भव! वषट्! सन्निधि–करणम्।

भव वन में भटक रहा हूँ मैं, भर सकी न तृष्णा की खाई।
भव–सागर के अथाह दुःख में, सुख की जल–बिंदु नहीं पाई।।
जिस भाँति आप ने तृष्णा पर, जय पाकर तृषा बुझाई है।
अपनी अ–तृप्ति पर अब तुम से, जय पाने की सुधि आई है।।
ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
जन्म–जरा–मृत्यु–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।1।

क्रोधित हो क्रूर कमठ ने जब, नभ से ज्वाला बरसाई थी।
इस आत्म–ध्यान की मुद्रा में, आकुलता तनिक न आई थी।।
विघ्नों पर बैर–विरोधों पर, मैं साम्य–भाव धर जय पाऊँ।
मन की आकुल–ता मिटे जाये, ऐसी शीतल–ता पा जाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
संसार–ताप–वि–नाश–नाय चंदनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।2।

तुम ने कर्मों पर जय पाकर, मोती–सा जीवन पाया है।
यह निर्मल–ता मैं भी पाऊँ, मेरे मन यही समाया है।।
यह मेरा अस्त–व्यस्त जीवन, इसमें सुख कहीं न पाता हूँ।
मैं भी अ–क्षय पद पाने को, शुभ अ–क्षत तुम्हें चढ़ाता हूँ।।
ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतान् निर्–वपामी–ति स्वाहा।3।

अध्या–त्म–वाद के पुष्पों से, जीवन फुल–वारी महकाई।
जितना–जितना उप–सर्ग सहा, उतनी–उतनी दृढ़ता आई।।
मैं इन पुष्पों से वंचित हूँ, अब इन को पाने आया हूँ।
चरणों पर अर्पित करने को, कुछ पुष्प सँजो–कर लाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
काम–बाण–वि–ध्वंस–नाय पुष्पं निर्–वपामी–ति स्वाहा।4।

जय पाकर चपल इन्द्रियों पर, अंतर की क्षुधा मिटा डाली।
अ–परि–ग्रह की आलोक शक्ति, अप ने अंदर की प्रगटा ली।।
भटकाती फिरती क्षुधा मुझे, मैं तृप्त नहीं हो पाया हूँ।
इच्छाओं पर जय पाने को, मैं शरण तुम्हारी आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
क्षुधा–रोग–वि–नाश–नाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।5।

अप ने अज्ञान अँधेरे में, वह कमठ फिरा मारा–मारा।
व्यन्तर वि–क्रिया–धारी था पर, तप के उजियारे से हारा।।
मैं अंध–कार में भटक रहा, उजियारा पाने आया हूँ।
जो ज्योति आप में दर्शित है, वह ज्योति जगाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
मोहां–ध–कार–वि–नाश–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।6।

तुम ने तप के दावा–नल में, कर्मों की धूप जलाई है।
जो सिद्ध–शिला तक जा पहुँची, वह निर्मल गंध उड़ाई है।।
मैं कर्म–बंधनों में जकड़ा, भव–बंधन से घबराया हूँ।
वसु कर्म दहन के लिए तुम्हें, मैं धूप चढ़ाने आया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
अष्ट–कर्म–दह–नाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।7।

तुम महा–तपस्वी शांति–मूर्ति, उप–सर्ग तुम्हें न डिगा पाये।
तप के फल ने पद्मा–वति अरु, इन्द्रों के आसन कम्पाये।।
ऐसे उत्तम फल की आशा मैं, मन में उमड़ी बहु पाता हूँ।
ऐसा शिव–सुख फल पाने को, फल की शुभ भेंट चढ़ाता हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।8।

सं–घर्षो में उप–सर्गो में, तुम ने समता का भाव धरा।
आदर्श तुम्हारा अमृत–बन, भक्तों के जीवन में बिखरा।।
मैं अष्ट–द्रव्य से पूजा का, शुभ थाल सजा कर लाया हूँ।
जो पदवी तुम ने पाई है, मैं भी उस पर ललचाया हूँ।।

ॐ ह्रीं श्री–अहिच्छत्र–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र!
अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।9।

पंचकल्याणक- अर्घ्यावली

बैशाख–कृष्ण–द्वितीया के दिन, तुम वामा के उर में आये।
श्री अश्व–सेन–नृप के घर में, आनंद भरे मंगल छाये।।

ॐ ह्रीं वैशाख–कृष्ण–द्वितीया–यां गर्भ–मंगल–मंडिताय
श्री–पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।1।

जब पौष–कृष्ण–एकादशि को, धरती पर नया प्रसून खिला।
भूले भटके भ्रमते जग को, आत्मोन्नति का आलोक मिला।।

ॐ ह्रीं पौष–कृष्ण–एकादश्यां जन्म–मंगल–मंडिताय
श्रीपार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।2।

एकादशि–पौष–कृष्ण के दिन, तुमने संसार अथिर पाया।
दीक्षा लेकर आध्यात्मिक पथ, तुमने तप द्वारा अपनाय।।

ॐ ह्रीं पौष–कृष्ण–एकादश्यां तपो–मंगल–मंडिताय
श्रीपार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।3।

अहिच्छत्र–धरा पर जी भर कर, की क्रूर कमठ ने मनमानी।
तब कृष्ण–चैत्र–चतुर्थी को, पद प्राप्त किया केवल ज्ञानी।।

यह वंदनीय हो गई धरा, दश भव का बैरी पछताया।
छेवों ने जय जयकारों से, सारा भूमंडल गुँजाया।।

ॐ ह्रीं चैत्र–कृष्ण–चतुर्थी–दिवसे श्री अहिच्छत्र–तीर्थे ज्ञान–साम्राज्य–प्राप्ताय
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।4।

श्रावण शुक्ल सप्तमि के दिन, सम्मेद–शिखर ने यश पाया।
'सुवरणभद्र' कूट से जब, शिव मुक्तिरमा को परिणाया।।

ॐ ह्रीं श्रावण–शुक्ल–सप्तम्यां सम्मेद–शिखरस्य सुवर्ण–भद्र–कूटात् मोक्ष–मंगल–मंडिताय
श्री पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।5।

जयमाला

सुर–नर किन्नर गण–धर फण–धर, योगी–श्वर ध्यान लगाते हैं।
भग–वान् तुम्हारी महिमा का, यश–गान मुनी–श्वर गाते हैं।1।

जो ध्यान तुम्हारा ध्याते हैं, दुःख उन के पास न आते हैं।
जो शरण तुम्हारी रहते हैं, उन के संकट कट जाते हैं।।2।।

तुम कर्म–दली तुम महा–बली, इन्द्रिय–सुख पर जय पायी है।
मैं भी तुम–जैसा बन जाऊँ, मन में यह आज समायी है।।3।।

तुम ने शरीर औ' आत्मा के, अंतर–स्वभाव को जाना है।
नश्वर शरीर का मोह तजा, निश्चय स्व–रूप पहिचाना है।।4।।

तुम द्रव्य–मोह औ' भाव–मोह, इन दोनों से न्यारे–न्यारे।
जो पुद्गल के निमित्त कारण, वे राग–द्वेष तुम से हारे।।5।।

तुम पर निर्जन वन में बरसे, ओले–शोले पत्थर–पानी।
आलोक तपस्या के आगे, चल सकी न शठ की मन–मानी।।6।।

यह सहन–शक्ति का ही बल है, जो तप के द्वारा आया था।
जिस ने स्वर्गों में देवों के, सिंहा–सन को कम्पाया था।।7।।

'अहि' का स्व–रूप धर कर तत्–क्षण, धरणे–न्द्र स्वर्ग से आया था।
ध्यान–स्थ आप के ऊपर प्रभु, फण मंडप बन कर छाया था।।8।।

उप–सर्ग कमठ का नष्ट किया, मस्तक पर फण मंडप रचकर।
पद्मा–देवी ने उठा लिया, तुम को सिर के सिंहा–सन पर।।9।।

तप के प्रभाव से देवों ने, व्यंतर की माया वि–नशाई।
पर प्रभो आप–की मुद्रा में, तिल–मात्र न आकुल–ता आई।।10।।

उप–सर्ग का आतंक तुम्हें, हे प्रभु! तिल–भर न डिगा पाया।
अपनी विडम्बना पर बैरी, अ–सफल हो मन में पछताया।।11।।

शठ कमठ बैर के वशी–भूत, भौतिक बल पर बौराया था।
अध्या–त्म–आत्म–बल का गौरव, वह मूर्ख समझ न पाया था।।12।।

दश भव तक जिस ने बैर किया, पीड़ाएँ देकर मन–मानी।

फिर हार मानकर चरणों में, झुक गया स्वयं वह अभि–मानी।।13।।

यह बैर महा–दुःख–दायी है, यह बैर न बैर मिटाता है।
यह बैर निरं–तर प्राणी को, भव–सागर में भटकाता है।।14।।

थ्जन को भव–सुख की चाह नहीं, दुःख से न जरा भय खाते हैं।
वे सर्व–सिद्धियों को पाकर, भव–सागर से तिर जाते है।।15।।

जिस ने भी शुद्ध मनो–बल से, ये कठिन परीषह झेली हैं।
सब ऋद्धि–सिद्धियाँ नत होकर, उनके चरणों पर खेली हैं।।16।।

जो निर्–वि–कल्प चैतन्य–रूप, शिव का स्व–रूप तुम ने पाया।
ऐसा पवित्र पद पाने को, मेरा अंतर मन ललचाया।।17।।

कार्माण–वर्गणाएँ मिलकर, भव वन में भ्रमण कराती हैं।
जो शरण तुम्हारी आते हैं, ये उन के पास न आती हैं।।18।।

तुम ने सब बैर विरोधों पर, सम–दर्शी बन जय पायी है।
मैं भी ऐसी समता पाऊँ, यह मेरे हृदय समायी है।।19।।

अप ने समान ही तुम सब का, जीवन विशाल कर देते हो।
तुम हो तिखाल वाले बाबा, जग को निहाल कर देते हो।।20।।

तुम हो त्रि–काल–दर्शी तुम ने, तीर्थं–कर का पद पाया है।
तुम हो महान् अति–शय–धारी, तुम में आनंद समाया है।।21।।

चिन्–मूरति आप अनंत–गुणी, रागा–दि न तुम को छू पाये।
इस पर भी हर शरणा–गत, मन–माने सुख साधन पाये।।22।।

तुम रागद्वेष से दूर–दूर, इनसे न तुम्हारा नाता है
स्वयमे–व वृक्ष के नीचे जग, शीतल छाया पा जाता है।।23।।

अपनी सुगन्ध क्या फूल कहीं, घर–घर आकर बिखराते हैं!
सूरज की किरणों को छूकर, सुमन स्वयं खिल जाते हैं।।24।।

भौतिक पारस मणि तो केवल, लोहे को स्वर्ण बनाती है।
हे पार्श्व प्रभो! तुम को छूकर, आत्मा कुंदन बन जाती है।।25।।

तुम सर्व–शक्ति–धारी हो प्रभु, ऐसा बल मैं भी पाऊँगा।
यदि यह बल मुझ को भी दे दो, फिर कुछ न माँगने आऊँगा।।26।।

कह रहा भक्ति के वशी–भूत, हे दया–सिन्धु! स्वीकारो तुम।
जैसे तुम जग से पार हुए, मुझ को भी पार उतारो तुम ।।27।।

जिस ने भी शरण तुम्हारी ली, वह खाली न रह पाया है।
अपनी अपनी आशाओं का, सब ने वाँछित फल पाया है।।28।।

बहु–मूल्य सम्पदाएँ सारी, ध्याने वालों ने पाई हैं।
पारस के भक्तों पर निधियाँ, स्वयमे–व सिमट कर आई हैं।।29।।

जो मन से पूजा करते हैं, पूजा उन को फल देती है।
प्रभु–पूजा भक्त पुजारी के, सारे संकट हर लेती है।।30।।

जो पथ तुम ने अपनाया है, वह सीधा शिव को जाता है।
जो इस पथ का अनु–यायी है, वह परम मोक्ष–पद पाता है।।31।।

ॐ ह्रीं श्री अहिच्छत्र पार्श्व–नाथ–जिनेन्द्र! जय–माला–पूर्णा–र्घं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

¼nkgk½

पार्श्व–नाथ–भगवान् को जो पूजे धर ध्यान।
उसे लोक–पर–लोक के, मिलें सकल वर–दान।।

।।इत्या–शीर्–वादः पुष्पां–जलिं क्षिपेत्।।

श्री महावीर-जिन पूजा

(श्री वीर महा-अतिवीर)

श्री–मत् वीर हरें भव–पीर, भरें सुख–सीर अना–कुल–ताई,
केहरि–अंक अरी–कर–दंक, नये हरि–पंकति–मौलि सुआई।
मैं तुम को इत थापतु हौं प्रभु, भक्ति–समेत हिये हरषाई,
हे करुणा–धन–धारक देव, इहाँ अब तिष्ठहु शीघ्रहि आई।।

ॐ ह्रीं श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्र! अत्र अवतर–अवतर संवौषट् आह्वानं।
ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्र! अत्र तिष्ठ–तिष्ठ ठः–ठः स्था–पनम्।
ॐ ह्रीं श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्र! अत्र मम सन्–नि–हितो भव–भव वषट् सन्–निधि–करणम्।

(सन्निधिकरणम्)

क्षीरो–दधि–सम शुचि नीर, कंचन–भृंग भरों,
प्रभु वेग हरो भव–पीर, या तैं धार करों।
श्री–वीर महा–अति–वीर सन्मति–नायक हो,
जय वर्द्ध–मान गुण–धीर सन्मति–दायक हो।।

ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय जन्म–जरा–मृत्य–वि–नाश–नाय जलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

मलया–गिर–चन्दन सार, केशर–संग घसौं।
प्रभु भव–आताप निवार, पूजत हिय हुलसौं।। श्री–वीर.....।।

ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय भवा–ताप–वि–नाश–नाय चन्दनं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

तन्दुल सित शशि–सम शुद्ध, लीनों थार भरी।
तसु पुंज धरों अ–विरुद्ध, पावों शिव–नगरी।। श्री–वीर....।।

ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अक्षय–पद–प्राप्तये अक्षतं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

सुर–तरु के सुमन–समेत, सुमन–सुमन प्यारे।
सो मन्मथ–भंजन हेतु, पूजों पद थारे।। श्री–वीर.....।।

ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय काम–बाण–वि–ध्वंस–नाय पुष्पं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

रस–रज्जत सज्जत सद्य, मज्जत थार भरी।
पद जज्जत–रज्जत अद्य, भज्जत भूख–अरी।। श्री–वीर.....।।

ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय क्षुधा–रोग–वि–नाश–नाय नैवेद्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

तम–खण्डित मण्डित–नेह, दीपक जोवत हों।
तुम पद–तर हे सुख–गेह, भ्रम–तम खोवत हों।।श्री–वीर.....।।
ॐ ह्रीं श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय मोहा–न्ध–कार–वि–नाश–नाय दीपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

हरि–चन्दन अगर–कपूर, चूर सुगन्ध–करा।
तुम पद–तर खेवत भूरि, आठों कर्म जरा।। श्री–वीर....।।
ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अष्ट–कर्म–वि–ध्वंस–नाय धूपं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

ऋतु–फल कल–वर्जित लाय, कंचन–थार भरा।
शिव–फल–हित हे जिन–राय, तुम ढिंग भेंट धरा।। श्री–वीर.....।।
ॐ ह्री श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय मोक्ष–फल–प्राप्तये फलं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जल–फल वसु सजि हिम–थार, तन–मन–मोद धरों।
गुण गाऊँ भव–दधि तार, पूजत पाप हरों ।। श्री–वीर.....।।
ॐ ह्रीं श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

पंचकल्याणक-अर्घ्यावली

मोहि राखो हो सरना, श्री–वर्द्ध–मान जिन–राय जी, मोहि राखो हो सरना।
गरभ साढ़ सित छट्ठ लियो थिति, त्रिशला उर अघ–हरना।
सुर सुर–पति तित सेव करें नित, मैं पूजों भव–तरना।। नाथ मोहि राखो.....।।
ॐ ह्रीं आषाढ़–शुक्ल–षष्ठ्यां गर्भ–कल्याण–क–प्राप्ताय
श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जनम चैत सित–तेरस के दिन, कुण्डल–पुर कन–वरना।
सुर–गिरि सुर–गुरु पूज रचायो, मैं पूजों भव–हरना।। नाथ मोहि राखो.....।।
ॐ ह्रीं चैत्र–शुक्ल–त्रयोदश्यां जन्म–कल्याण.क.प्राप्ताय
श्री–वर्द्ध–मान–जिने.न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

मग–सिर असित मनो–हर दशमी, ता दिन तप आ–चरना।
नृप–कुमार घर पारन कीनो, मैं पूजों तुम–चरना।। नाथ मोहि राखो.....।।
ॐ ह्रीं मार्ग–शीर्ष–कृष्ण–दशम्यां तपः–कल्याण–क–प्राप्ताय
श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

शुकल दशैं वैसाख दिवस अरि, घाति चतुक छय करना।
केवल लहि भवि–भव–सर तारे, जजों चरन सुख–भरना।। नाथ मोहि राखो.....।।

ॐ ह्रीं वैशाख–शुक्ल–दशम्यां केवल–ज्ञान–कल्याण–क–प्राप्ताय
श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

कातिक श्याम अमावस शिव–तिय, पावा–पुर तैं वरना।
गन–फनि–वृन्द जजैं तित बहु–विधि, मैं पूजों भय–हरना।। नाथ मोहि राखो.....।।

ॐ ह्रीं कार्तिक–कृष्ण–अमावस्यां मोक्ष–कल्याण–क–प्राप्ताय
श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

जयमाला

गन–धर असनि–धर, चक्र–धर, हल–धर, गदा–धर वर–वदा,
अरु चाप–धर विद्या–सुधर, तिरसूल–धर सेवहिं सदा।

दुख–हरन आनँद–भरन तारन, तरन चरन रसाल हैं,
सु–कुमाल गुन–मनि–माल उन्नत, भाल की जय–माल हैं।।

जय त्रिशला–नन्दन, हरि–कृत–वन्दन, जगदा–नन्दन, चन्द–वरं।
भव–ताप–निकन्दन, तन कन–मन्दन, रहित–सपन्दन, नयन–धरं।।

जय केवल–भानु–कला–सदनं, भवि–कोक–विकासन–कंज–वनं।
जग–जीत महा–रिपु–मोह–हरं, रज ज्ञान–दृगांवर चूर–करं।।
गर्भा–दिक–मंगल–मण्डित हो, दुःख–दारिद को नित खण्डित हो।
जग माहिं तुम्हीं सत–पण्डित हो, तुम ही भव–भाव–विहण्डित हो।।
हरि–वंश–सरोजन को रवि हो, बल–वन्त महन्त तुम्हीं कवि हो।
लहि केवल धर्म–प्रकाश कियो, अब–लों सोइ मारग राजति यो।।
पुनि आप तने गुन माहिं सही, सुर मगन रहैंऽ जितने सब ही।
तिन की वनिता गुन गावत हैं, लय माननि सौं मन–भावत हैं।।
पुनि नाचत रंग उमंग भरी, तुअ भक्ति विषै पग येम धरी।
झननं–झननं–झननं–झननं, सुर लेत तहाँ तननं–तननं।।
घननं–घननं घन घण्ट बजै, दृमदं–दृमदं मिर–दंग सजै।
गगनां–गन–गर्भ–गता सु–गता, ततता–ततता अतता–वितता।।
धृगतां–धृगतां गति बाजत है, सुर–ताल रसाल जु छाजत है।
सननं–सननं–सननं नभ में, इक रूप अनेक जु धारि भ्रमें।।
कइ नारि सु–वीन बजा–वति हैं, तुम–रो जस उज्ज्वल गावति हैं।

कर–ताल विषै कर–ताल धरें, सुर ताल विशाल जु नाद करें।।
इन आदि अनेक उछाह भरी, सुर भक्ति करें प्रभु जी तुम–री।
तुम ही जग–जीवन के पितु हो, तुम ही बिन कारन तैं हितु हो।।
तुम ही सब विघ्न–विनाशन हो, तुम ही निज आनँद–भासन हो।
तुम ही चित–चिन्तित–दायक हो, जग–माहिं तुम्हीं सब लायक हो।।
तुम–रे पन मंगल माहिं सही, जिय उत्तम पुन्य लियो सब ही।
हम को तुम–री सरना–गत है, तुम–रे गुन में मन पागत है।।
प्रभु मो हिय आप सदा बसिये, जब लों वसु कर्म नहीं नसिये।
तब लों तुम ध्यान हिये वरतो, तब लों श्रुत–चिन्तन चित्त रतो।।
तब लों व्रत चारित चाहतु हों, तब लों शुभ–भाव सु–गाहतु हों।
तब लों सत–संगति नित्त रहो, तब लों मम संजम चित्त गहो।।

जब लों नहिं नाश करौं अरि को, शिव–नारि वरौं समता धरि को।
यह द्यो तब लों हम को जिन जी, हम जाचतु हैं इतनी सुन जी।।

(घत्ता छन्द)

श्री–वीर–जिनेशा नमित–सुरेशा, नाग–नरेशा भगति–भरा।
'वृन्दावन' ध्यावै विघन नशावै, वांछित पावै शर्म–वरा।।

ॐ ह्रीं श्री–वर्द्ध–मान–जिने–न्द्राय पूर्णा–र्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।

(दोहा)

श्री–सनमति के जुगल पद, जो पूजै धरि प्रीति।
'वृन्दावन' सो चतुर नर, लहै मुक्ति–नवनीत।।

।। पुष्पा–ञ्जलिं–क्षिपामि।। इत्या–शीर्–वादः ।।

समुच्चय चौबीसी पूजा

कवि श्री वृन्दावनदास

ऋषभ अजित संभव अभिनंदन, सुमति पदम सुपार्श्व जिनराय।

चंद पुहुप शीतल श्रेयांस-जिन, वासुपूज्य पूजित-सुरराय।

विमल अनंत धरम जस-उज्ज्वल, शांति कुंथु अर मल्लि मनाय।

मुनिसुव्रत नमि नेमि पार्श्वप्रभु, वर्द्धमान पद-पुष्प चढ़ाय॥

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट्! (इति आह्वानानम्)

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठः! ठः! (इति स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री चतुर्विंशति-जिनसमूह! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्! (इति सन्निधिकरणम्)

मुनिमन-सम उज्ज्वल नीर, प्रासुक गन्ध भरा।

भरि कनक-कटोरी धीर, दीनी धार धरा॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा।१।

गोशीर कपूर मिलाय, केशर-रंग भरी।

जिन-चरनन देत चढ़ाय, भव-आताप हरी॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो भवताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा।२।

तंदुल सित सोम-समान, सुन्दर अनियारे।

मुक्ताफल की उनमान, पुञ्ज धरूं प्यारे॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा।३।

वरकंज कदंब कुरंड, सुमन सुगंध भरे।

जिन-अग्र धरूं गुणमंड, काम-कलंक हरे॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा।४।

मनमोदन मोदक आदि, सुन्दर सद्य बने।

रसपूरित प्रासुक स्वाद, जजत क्षुधादि हने॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो क्षुधारोग विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा।५।

तमखंडन दीप जगाय, धारूं तुम आगे।

सब तिमिर-मोह क्षय जाय, ज्ञान-कला जागे॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा।६।

दशगंध हुताशन-माँहि, हे प्रभु खेवत हूँ।

मिस धूम करम जरि जाँहि, तुम पद सेवत हूँ॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा।७।

शुचि-पक्व-सरस-फल सार, सब ऋतु के ल्यायो।

देखत दृग-मन को प्यार, पूजत सुख पायो॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा।८।

जल-फल आठों शुचिसार, ताको अर्घ करूं।

तुमको अरपूं भवतार, भव तरि मोक्ष वरूं॥

चौबीसों श्री जिनचंद, आनंद-कंद सही।

पद-जजत हरत भवफंद, पावत मोक्ष मही॥

ॐ ह्रीं श्री ऋषभादि-वीरांतेभ्यो अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।९।

जयमाला

(दोहा)

श्रीमत तीरथनाथ पद, माथ नाय हित-हेत।

गाऊँ गुणमाला अबै, अजर अमर पद देत॥

(त्रिभंगी छन्द)

जय भवतम-भंजन जन-मन-कंजन, रंजन दिनमनि स्वच्छकरा।

शिवमग-परकाशक, अरिगण-नाशक, चौबीसों जिनराजवरा॥

(छन्द पद्धरि)

जय ऋषभदेव ऋषिगन नमंत, जय अजित जीत वसु-अरि तुरंत |

जय संभव भव-भय करत चूर, जय अभिनंदन आनंदपूर ||१||

जय सुमति सुमति-दायक दयाल, जय पद्म पद्मद्युति तनरसाल |

जय-जय सुपार्श्व भव-पास नाश, जय चंद्र चंद्र-तन-द्युति प्रकाश ||२||

जय पुष्पदंत द्युति-दंत सेत, जय शीतल शीतल गुन-निकेत |

जय श्रेयनाथ नुत-सहसभुज्ज, जय वासवपूजित वासुपुज्ज ||३||

जय विमल विमल-पद देनहार, जय जय अनंत गुन-गन अपार |

जय धर्म धर्म शिव-शर्म देत, जय शांति शांति-पुष्टी करेत ||४||

जय कुंथु कुंथु-आदिक रखेय, जय अरजिन वसु-अरि क्षय करेय |

जय मल्लि मल्ल हत मोह-मल्ल, जय मुनिसुव्रत व्रत-शल्ल-दल्ल ||५||

जय नमि नित वासव-नुत सपेम, जय नेमिनाथ वृष-चक्र-नेम |

जय पारसनाथ अनाथ-नाथ, जय वर्द्धमान शिव-नगर साथ ||६||

(त्रिभंगी छन्द)

चौबीस जिनंदा आनंद-कंदा, पाप-निकंदा सुखकारी |

तिन पद-जुग-चंदा उदय अमंदा, वासव-वंदा हितकारी ||

(सोरठा छन्द)

भुक्ति-मुक्ति दातार, चौबीसों जिनराजवर |

तिन-पद मन-वच-धार, जो पूजे सो शिव लहे ||

।।इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत्।।

श्री चंद्रप्रभ जिन पूजा (तिजारा)

शुभ पुण्य-उदय से ही प्रभुवर! दर्शन तेरा कर पाते हैं।
केवल दर्शन से ही प्रभु, सारे पाप मेरे कट जाते हैं॥
देहरे के चंद्रप्रभ-स्वामी! आह्वानन करने आया हूँ।
मम हृदय-कमल में आ तिष्ठो! तेरे चरणों में आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र अवतर! अवतर! संवौषट् (आह्वानम्)

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ! तिष्ठ! ठः! ठः! (स्थापनम्)

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट् (सत्रिधिकरण)

(अथाष्टक)

भोगों में फँसकर हे प्रभुवर! जीवन को वृथा गँवाया है।
इस जन्म-मरण से मुझे नहीं, छुटकारा मिलने पाया है॥
मन में कुछ भाव उठे मेरे, जल झारी में भर लाया हूँ।
मन के मिथ्या-मल धोने को, चरणों में तेरे आया हूँ॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय जन्म-जरा-मृत्यु-विनाशनाय जलं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

निज-अंतर शीतल करने को,चंदन घिसकर ले आया हूँ।
मन शांत हुआ ना इससे भी, तेरे चरणों में आया हूँ॥
क्रोधादि कषायों के कारण, संतप्त-हृदय प्रभु मेरा है।
शीतलता मुझको मिल जाये, हे नाथ! सहारा तेरा है॥

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय संसारताप-विनाशनाय चंदनं निर्वपामीति स्वाहा ।२।

पूजा में ध्यान लगाने को, अक्षत धोकर ले आया हूँ।
चरणों में पुंज चढ़ाकर के, अक्षयपद पाने आया हूँ॥
निर्मल आत्मा होवे मेरी, सार्थक पूजा तब तेरी है।
निज शाश्वत अक्षयपद पाऊँ, ऐसी प्रभु विनती मेरी है॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अक्षयपद-प्राप्तये अक्षतान् निर्वपामीति स्वाहा ।३।

पर-गंध मिटाने को प्रभुवर, यह पुष्प सुगंधी लाया हूँ।
तेरे चरणों में अर्पित कर, तुम-सा ही होने आया हूँ॥
हे चन्द्रप्रभु! यह अरज मेरी, भवसागर पार लगा देना।
यह काम-अग्नि का रोग बड़ा, छुटकारा नाथ दिला देना॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय कामबाण-विध्वंसनाय पुष्पं निर्वपामीति स्वाहा ।४।

दु:ख देती है तृष्णा मुझको, कैसे छुटकारा पाऊँ मैं।
हे नाथ! बता दो आज मुझे, चरणों में शीश झुकाऊँ मैं॥
यह क्षुधा मिटाने को प्रभुवर, नैवेद्य बनाकर लाया हूँ।
हे नाथ! मिटा दो क्षुधा मेरी, भव-भव में फिरता आया हूँ॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय क्षुधा रोग-विनाशनाय नैवेद्यं निर्वपामीति स्वाहा ।५।
यह दीपक की ज्योति प्यारी, अंधियारा दूर भगाती है।
पर यह भी नश्वर है प्रभुवर, झंझा इसको धमकाती है॥
हे चंद्रप्रभु! दे दो ऐसा, दीपक अज्ञान मिटा डाले।
मोहांधकार हो नष्ट मेरा, यह ज्योति नई मन में बाले॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय मोहांधकार-विनाशनाय दीपं निर्वपामीति स्वाहा ।६।

शुभ धूप दशांग बना करके, पावक में खेऊँ हे प्रभुवर।
क्षय कर्मों का प्रभु हो जावे, जग का झंझट सारा नश्वर॥
हे चंद्रप्रभु! अन्तर्यामी, कैसे छुटकारा अब पाऊँ।
हे नाथ! बता दो मार्ग मुझे, चरणों पर बलिहारी जाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अष्टकर्म-दहनाय धूपं निर्वपामीति स्वाहा ।७।

पिस्ता बादाम लवंगादिक, भर थाली प्रभु मैं लाया हूँ।
चरणों में नाथ चढ़ा करके, अमृत-रस पीने आया हूँ॥
करुणा के सागर दया करो, मुक्ति का मारग अब पाऊँ।
दे दो वरदान प्रभु ऐसा, शिवपुर को हे प्रभुवर जाऊँ॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय मोक्षफल-प्राप्तये फलं निर्वपामीति स्वाहा ।८।

जल चंदन अक्षत पुष्प चरु, दीपक घृत से भर लाया हूँ।
दस-गंध धूप फल मिला अर्घ ले, स्वामी अति-हरषाया हूँ॥
हे नाथ! अनर्घ्य-पद पाने को, तेरे चरणों में आया हूँ।
भव-भव के बंध कटें प्रभुवर! यह अरज सुनाने आया हूँ॥
ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद-प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।९।

पंचकल्याणक-अर्घ्यावली

(शंभु छन्द)

जब गर्भ में प्रभुजी आये थे, इन्द्रों ने नगर सजाया था।
छ: मास प्रथम ही आकर के, रत्नों का मेह बरसाया था॥
तिथि चैत्र-वदी-पंचम प्यारी, जब गर्भ में प्रभुजी आये थे।
लक्ष्मणा माता को पहले ही, सोलह सपने दिखलाये थे॥
ॐ ह्रीं चैत्र-कृष्ण-पंचम्यां गर्भमंगल-मंडिताय
श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।१।

शुभ-बेला में प्रभु जन्म हुआ, वदि-पौष-एकादशि थी प्यारी।
श्री महासेन-नृप के घर में, हुई जय-जयकार बड़ी भारी॥
पांडुकशिला पर अभिषेक किया, सब देव मिले थे चतुर्निकाय।
सो जिनचंद्र जयो जग-माँहीं, विघ्नहरण और मंगलदाय॥
ॐ ह्रीं पौष-कृष्ण-एकादश्यां जन्ममंगल-मंडिताय
श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।२।

जग के झंझट से मन ऊबा, तप की ली प्रभुजी ने ठहराय।
पौष-वदी-ग्यारस को इंद्र ने, तप-कल्याण कियो हरषाय॥
सर्वर्तुक-वन में जाय विराजे, केशलोंच जिन कियो हरषाय।
देहरे के श्री चंद्रप्रभु को, अर्घ्य चढ़ाऊँ नित्य बनाय॥
ॐ ह्रीं पौष-कृष्ण-एकादश्यां तपोमंगल-मंडिताय
श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।३।

फाल्गुन-वदी-सप्तमी के दिन, चार घातिया घात महान।
समवसरण-रचना हरि कीनी, ता दिन पायो केवलज्ञान॥
साढ़े आठ योजन परमित था, समवसरण श्री जिन भगवान।
ऐसे श्री जिन चंद्रप्रभ को, अर्घ्य चढ़ाय करूँ नित ध्यान॥
ॐ ह्रीं फाल्गुन-कृष्ण-सप्तम्यां केवलज्ञान-मंडिताय
श्रीचद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।४।

शुक्ला-फाल्गुन-सप्तमि के दिन, ललितकूट शुभ उत्तम-थान।
श्री जिन चंद्रप्रभु जगनामी, पायो आतम शिव-कल्याण॥
वसु कर्म जिन चन्द्र ने जीते, पहुँचे स्वामी मोक्ष-मँझार।
निर्वाण महोत्सव कियो इंद्र ने, देव करें सब जय-जयकार॥
ॐ ह्रीं फाल्गुन-कृष्ण-सप्तम्यां मोक्षमंगल-मंडिताय
श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।५।

श्रावण-सुदी-दशमी को प्रभु जी, प्रकट भये देहरे में आन।
संवत तेरह दो सहस्र ऊपर,शुभ गुरुवार को ता दिन जान॥
जय-जयकार हुई देहरे में, प्रकट हुए जब श्री भगवान्।
चरणों में आ अर्घ्य चढ़ाऊँ, प्रभु के दर्शन सुख की खान॥
ॐ ह्रीं श्रावण-शुक्ल-दशम्यां देहरास्थाने प्रकटरूपाय
श्रीचंद्रप्रभजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।६।

जयमाला

हे चंद्रप्रभु! तुम जगतपिता, जगदीश्वर, तुम परमात्मा हो।
तुम ही हो नाथ अनाथों के, जग को निज आनंददाता हो।।१।
इन्द्रियों को जीत लिया तुमने, 'जितेन्द्र' नाथ कहाये हो।
तुम ही हो परम-हितैषी प्रभु, गुरु तुम ही नाथ कहाये हो।।२।
इस नगर तिजारा में स्वामी, 'देहरा' स्थान निराला है।
दु:ख दु:खियों का हरनेवाला, श्री चंद्र नाम अतिप्यारा है।।३।
जो भावसहित पूजा करते, मनवाँछित फल पा जाते हैं।
दर्शन से रोग नशें सारे, गुण-गान तेरा सब गाते हैं।।४।
मैं भी हूँ नाथ शरण आया, कर्मों ने मुझको रौंदा है।
यह कर्म बहुत दु:ख देते हैं, प्रभु! एक सहारा तेरा है।।५।
कभी जन्म हुआ कभी मरण हुआ, हे नाथ! बहुत दु:ख पाया है।
कभी नरक गया कभी स्वर्ग गया, भ्रमता-भ्रमता ही आया है।।६।
तिर्यंच-गति के दु:ख सहे, ये जीवन बहुत अकुलाया है।
पशुगति में मार सही भारी, बोझा रख खूब भगाया है।।७।
अंजन से चोर अधम तारे, भव-सिन्धु से पार लगाया है।
सोमा की सुन करके टेर प्रभु! नाग को हार बनाया है।।८।
मुनि समंतभद्र को हे स्वामी, आ चमत्कार दिखलाया है।
कर चमत्कार को नमस्कार, चरणों में शीश झुकाया है।।९।
इस पंचमकाल में हे स्वामी! क्या अद्भुत-महिमा दिखलाई।
दु:ख दु:खियों का हरनेवाली, देहरे में प्रतिमा प्रकटाई।।१०।
शुभ पुण्य-उदय से हे स्वामी! दर्शन तेरा करने आया हूँ।

इस मोह-जाल से हे स्वामी! छुटकारा पाने आया हूँ।।११।

श्री चंद्रप्रभ! मोरी अर्ज सुनो, चरणों में तेरे आया हूँ।

भवसागर पार करो स्वामी! यह अर्ज सुनाने आया हूँ।।१२।

ॐ ह्रीं श्री चंद्रप्रभजिनेन्द्राय जयमाला-पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

(दोहा)

देहरे के श्री चंद्र को, भाव-सहित जो ध्याय।

'मुंशी' पावे सम्पदा, मनवाँछित फल पाय॥

।। इत्याशीर्वादः पुष्पांजलिं क्षिपेत् ।।

अर्घ्य

श्री आदिनाथ-जिन का अर्घ्य

शुचि निर्मल नीरं गन्ध सु–अक्षत पुष्प चरू ले मन हर–षाय,
दीप धूप फल अर्घ्य सु लेकर, नाचत ताल मृदङ्ग बजाय।
श्री आदिनाथ के चरण–कमल, पर बलि–बलि जाऊँ मन–वच–काय,
हो करुणा–निधि भव–दुःख मेटो, या तें मैं पूजों प्रभु–पाय।।

ॐ ह्रीं श्री–आदि–नाथ–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

श्री चंद्रप्रभ जिन का अर्घ्य

सजि आठों–दरब पुनीत, आठों–अंग नमूँ।
पूजूँ अष्टम–जिन मीत, अष्टम–अवनि गमूँ।।
श्री चंद्र–नाथ दुति–चंद, चरनन चंद लगे।
मन–वच–तन जजत अमंद, आतम–जोति जगे।।

ॐ ह्रीं श्री चंद्र–प्रभ–जिने–न्द्राय अनर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

श्री पुष्पदंत जिन का अर्घ्य

जल फल सकल मिलाय मनो–हर, मन–वच–तन हुल–साय,
तुम–पद पूजों प्रीति लाय कैं, जय–जय त्रि–भुवन–राय।
मेरी अरज सुनीजे, पुष्प–दन्त जिन–राय, मेरी अरज सुनीजे।।

ॐ ह्रीं श्री–पुष्प–दन्त–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा ।।

श्री वासवपूजित जिन का अर्घ्य

जल–फल दरब मिलाय गाय गुन, आठों अङ्ग नमाई,
शिव–पद–राज हेतु हे श्री–पति! निकट धरों यह लाई।
वासु–पूज्य वसु–पूज–तनुज–पद, वासव सेवत आई,
बाल–ब्रह्म–चारी लखि जिन को, शिव–तिय सन्मुख धाई।।

ॐ ह्रीं श्री–वासु–पूज्य–जिने–न्द्राय अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

श्री शांतिनाथ जिन का अर्घ्य

काला–दि वसु द्रव्य सँवारें, अर्घ चढ़ायें मंगल गाय।
'बखत रतन' के तुम ही साहिब, दीज्यो शिव–पुर–राज कराय।।
शांति–नाथ पंचम–चक्रे–श्वर, द्वादश–मदन तनो पद पाय।
तिन के चरण–कमल के पूजे, रोग–शोक–दुःख–दारिद जाय।।

ॐ ह्रीं श्री शांति–नाथ–जिने–न्द्राय अ–नर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

श्री मुनिसुव्रत जिन का अर्घ्य

जल.गंध आदि मिलाय आठोंए दरब अरघ संजो वरूं।

पूजूं चरन.रज भगति.जुतए जा तें जगत्.सागर तरूं।।

शिव.साथ करत सनाथ सुव्रत. नाथ मुनि.गुनमाल हैं।

तसु चरन आनंदभरन तारन.तरन विरद विशाल हैं।।

ॐ ह्रीं श्रीमुनिसुव्रतनाथ जिनेन्द्राय अनर्घ्यपद.प्राप्तये अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा ।।

श्री पारसनाथ जिन का अर्घ्य

नीर गंध अक्षतान् पुष्प चारु लीजिए।दीप धूप श्री–फलादि अर्घ तें जजीजिए।।
पार्श्व–नाथ देव सेव आपकी करुँ सदा।दीजिए निवास मोक्ष भूलिये नहीं कदा।।

ॐ ह्रीं श्री पार्श्व–नाथ–जिनें–द्राय अ–नर्घ्य–पद–प्राप्तये अर्घ्यं निर्–वपामी–ति स्वाहा।।

श्री वर्द्धमान जिन का अर्घ्य

जल.फल वसु सजि हिम.थार, तन.मन मोद धरों,
गुण गाऊँ भव.दधि.तार, पूजत पाप हरों।
श्री वीर महा.अति.वीर, सन्मति.नायक हो,
जय वर्द्ध.मान गुण.धीर, सन्मति.दायक हो।।

ॐ ह्रीं श्री.वर्द्धमान.जिने.न्द्राय अर्घ्यं निर्.वपामी.ति स्वाहा।।

श्री चौबीसी जिन का अर्घ्य

जल.फल आठों शुचि.सार, ताको अर्घ करूँ।
तुम को अरपूँ भव.तार, भव तरि मोक्ष वरूँ।।
चौबीसों श्री जिन.चंद, आनंद.कंद सही।
पद.जजत हरत भव.फंद, पावत मोक्ष.मही।।

ॐ ह्रीं ऋषभा.दि.वीरां.तेभ्यः चतुर्.विंशति.तीर्थं.करेभ्यो
अ.नर्घ्य.पद.प्राप्तये अर्घ्यं निर्.वपामी.ति स्वाहा।।

समुच्चय महार्घ्य

मैं देव श्री.अरहन्त पूजूँ, सिद्ध पूजूँ चाव सों।
आचार्य श्री.उव.झाय पूजूँ, साधु पूजूँ भाव सों।

अरहन्त.भाषित बैन पूजूँ, द्वादशां.ग रचे गनी।
पूजूँ दिग.म्बर गुरु.चरन शिव, हेतु सब आशा हनी।।

सर्वज्ञ.भाषित धर्म दश.विधि दया.मय पूजूँ सदा।
जजि भावना षोडश रत्न.त्रय, जा बिना शिव नहिं कदा।

त्रैलोक्य के कृत्रिम अ.कृत्रिम, चैत्य चैत्या.लय जजूँ।
पन.मेरु नन्दी–श्वर जिना.लय, खचर सुर पूजित भजूँ।

कैलास श्री–सम्मेद गिरि, गिरि.नार पूजूँ सदा।
चम्पा.पुरी पावा.पुरी पुनि, और तीरथ सर्व.दा।

चौबीस श्री.जिन.राज पूजूँ, बीस क्षेत्र विदेह के।
नामा.वली इक सहस वसु जपि, होय पति शिव.गेह के।।

(दोहा)

जल गंधा.क्षत पुष्प चरु, दीप धूप फल लाय।
सर्व पूज्य पद पूज हूँ, बहु.विध भक्ति बढ़ाय।।

ओं ह्रीं भावपूजा भाववंदना त्रिकालपूजा त्रिकालवंदना करें करावें भावना भावें
श्रीअरिहंतजी सिद्धजी आचार्यजी उपाध्यायजी सर्वसाधुजी पंच-परमेष्ठिभ्यो नमः,
प्रथमानुयोग-करणानुयोग-चरणानुयोग-द्रव्यानुयोगेभ्यो नमः,
दर्शनविशुद्ध्यादि-षोडशकारणेभ्यो नमः,
उत्तमक्षमादि- दशलाक्षणिकधर्माय नमः,
सम्यग्दर्शन- सम्यग्ज्ञान-सम्यक्चारित्रेभ्यो नमः,
जल के विषै, थल के विषै, आकाश के विषै, गुफा के विषै, पहाड़ के विषै,
नगर-नगरी विषै उर्ध्वलोक- मध्यलोक- पाताललोक विषै विराजमान
कृत्रिम-अकृत्रिम जिन-चैत्यालय-जिनबिम्बेभ्यो नमः,
विदेहक्षेत्रे विहरमान बीस-तीर्थकरेभ्यो नमः,
पाँच भरत पाँच ऐरावत दशक्षेत्र-सम्बन्धि तीस चौबीसी के सातसौ बीस जिनराजेभ्यो नमः,
नन्दीश्वरद्वीप-सम्बन्धी बावन- जिनचैत्यालयस्थ- जिनबिम्बेभ्यो नमः,
पंचमेरुसम्बन्धि-अस्सी-जिनचैत्यालयस्थ जिनबिम्बेभ्यो नमः,
सम्मेदशिखर कैलाश चंपापुर पावापुर गिरनार सोनागिर मथुरा तारंगा आदि सिद्धक्षेत्रेभ्यो नमः,
जैनबद्री मूडबिद्री देवगढ़ चन्देरी पपौरा हस्तिनापुर अयोध्या राजगृही चमत्कारजी
श्रीमहावीरजी पद्मपुरी तिजारा बड़ागांव आदि अतिशयक्षेत्रेभ्यो नमः,
श्री चारणऋद्धिधारी सप्तपरमषिऋभ्यो नमः,

ओं ह्रीं श्रीमंतं भगवन्तं कृपावन्तं श्रीवृषभादि महावीरपर्यन्तं चतुर्विंशति-तीर्थंकरं-परमदेवं
आद्यानां आद्ये जम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे आर्यखंडे ..... नाम्नि नगरे मासानामुत्तमे
<.....शुभे....> मासे शुभे <.....शुभे....> पक्षे शुभ <.....शुभे....> तिथौ
<.....शुभे....> वासरे मुनि-आर्यिकानां श्रावक-श्राविकाणां स्वकीय
सकल-कर्म क्षयार्थं अनर्घ्यपद-प्राप्तये जलधारा सहित महार्घ्यं सम्पूर्णार्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।
(मास, पक्ष, दिन की जानकारी ना होने पर "शुभे" का प्रयोग करें)

शांति-पाठ

शास्त्रो.क्त.विधि पूजा.महो.त्सव, सुर.पती चक्री करें,
हम सारिखे लघु.पुरुष कैसे, यथा.विधि पूजा करें ।

धन–क्रिया–ज्ञान–रहित न जानें, रीति पूजन नाथ जी,
हम भक्ति.वश तुम.चरण आगे, जोड़ लीने हाथ जी।।1।।

दुःख–हरण मंगल–करण आशा–भरन जिन–पूजा सही,
यों चित्त में सरधान मेरे, शक्ति है स्वयमेव ही।

तुम सारिखे दातार पाए, काज.लघु जाँचूँ कहाँ,
मुझ आप.सम कर लेहु स्वामी, यही इक वांछा महा।।2।।

संसार भीषण–विपिन में वसु–कर्म मिल आतापियो,
तिस दाह तें आ–कुलित चित है, शान्ति–थल कहुँ ना लियो।

तुम मिले शान्ति–स्वरूप जिन–वर, शान्ति–कर हे जग–पती,
वसु–कर्म मेरे शान्त कर दो, शान्ति–मय पंचम गती।।3।।

जब लौं नहीं शिव लहूँ तब लौं देहु यह धन पावना,
सतसंग शुद्धा–चरण श्रुत–अभ्यास आतम–भावना।

तुम–बिन अनंता–नंत–काल गयो रुलत जग–जाल में,
अब शरण आयो नाथ दुहु कर, जोड़ नावत भाल मैं।।4।।

कर प्रमाण के मान तैं, गगन नपै किहि भंत।
त्यों तुम–गुण वर्णन करत, कवि पावै नहिं अंत।।5।।

।। पुष्पा–ञ्जलिं–क्षिपामि।। इत्या–शीर्–वादः ।।

(कायोत्सर्गपूर्वक नौ बार णमोकार-मंत्र जपना चाहिये।)

विसर्जन-पाठ

सम्पूर्ण–विधि कर वीनऊँ, इस परम–पूजन ठाठ में,
अज्ञान–वश शास्त्रोक्त–विधि, तें चूक कीनों पाठ में।
सो होहु पूर्ण समस्त विधि–वत्, तुम चरण की शरण तैं,
वंदौं तुम्हें कर जोरि के, उद्धार जामन–मरण तें।।1।।

आह्वान स्थापन तथा, सन्–नि–धि–करण विधान जी,
पूजन विसर्जन यथा–विधि, जानूँ नहीं गुण–खान जी।
जो दोष लागौ सो नशो सब, तुम चरण की शरण तैं,
वंदौं तुम्हें कर जोरि के, उद्धार जामन–मरण तें।।2।।

तुम–रहित आवा–गमन आह्वानन कियो निज–भाव में,
विधि यथा–क्रम निज–शक्ति–सम, पूजन कियो अति–चाव में।
करहूँ विसर्जन भाव ही में, तुम चरण की शरण तें।
वंदौं तुम्हें कर जोरि के, उद्धार जामन–मरण तें।।3।।

ॐ ह्रां ह्रिं ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रें ह्रैं ह्रों ह्रौं ह्रं ह्रः अ–सि–आ–उ–सा
पंच–परमे–ष्ठि–पूजा–विधि–विसर्जनं करोमि, अपराध–क्षमा–पणं भवतु, यः यः यः।
पुष्पा–ञ्जलिं–क्षिपामि, इत्या–शीर्–वादः।

(दोहा)

तीन भुवन तिहुँ–काल में, तुम–सा देव न और।
सुख–कारण संकट–हरण, णमों 'जुगल' कर जोर।।

पुष्पा–ञ्जलिं–क्षिपामि, इत्या–शीर्–वादः।

श्री–जिन–वर की आशिका, लीजे शीष चढ़ाय।
भव–भव के पातक कटें, दुःख दूर हो जाय।।

स्तुति (प्रभु पतित पावन)

प्रभु पतित–पावन मैं अ.पावन, चरण आयो शरण जी।
यों विरद आप निहार स्वामी, मेंट जामन–मरण जी।।1।।

तुम ना पिछान्यो आन मान्यो, देव विविध प्रकार जी।
या बुद्धि–सेती निज न जान्यो, भ्रम गिन्यो हित–कार जी।।2।।

भव–विकट–वन में करम–वैरी, ज्ञान–धन मेरो हर्‌यो।
सब इष्ट भूल्यो भ्रष्ट होय, अ.निष्ट–गति धरतो फिर्‌यो।।3।।

धन–घड़ी यों धन–दिवस यों ही, धन–जनम मेरो भयो।
अब भाग्य मेरो उदय आयो, दरश प्रभु जी को लखि लयो।।4।।

छवि वीत.रागी नग्न–मुद्रा, दृष्टि नासा पै धरैं।
वसु–प्रातिहार्य अनन्त–गुण–युत, कोटि–रवि–छवि को हरैं।।5।।

मिट गयो तिमिर–मिथ्यात्व मेरो, उदय रवि–आतम भयो।
मो उर हरष ऐसो भयो मनु, रंक चिन्ता.मणि लह्‌यो।।6।।

दोउ हाथ जोड़ नवाहुँ मस्तक, वीनहूँ तुव चरण जी।
सर्वो–त्–कृष्ट त्रि–लोक–पति निज, सुनहु तारन–तरण जी।।7।।

याचूँ नहीं सुर–वास पुनि नर, राज परि–जन साथ जी।
'बुध' जाचहूँ तव भक्ति भव–भव, दीजिये शिव–नाथ जी।।8।।

जिन.स्तुति

मैं तुम चरण–कमल–गुण गाय, बहु–विध भक्ति करूँ मन लाय।

जनम–जनम प्रभु पाऊँ तोय, यह सेवा–फल दीजे मोय।।

कृपा तिहा–री ऐसी होय, जन्मन–मरन मिटावो मोय।
बार–बार मैं विनती करूँ, तुम–सेवा भव–सागर तरूँ।।

नाम लेत सब दु:ख मिट जाय, तुम दर्शन कीनो प्रभु आय।
तुम हो प्रभु देवन के देव, मैं तो करूँ चरण तुम सेव।।

जिन.पूजा में सब सुख होय, जिन.पूजा.सम अवर न कोय।
जिन.पूजा तैं स्वर्ग.विमान, अनु.क्रम तैं पावैं निर्वाण।।

मैं आयो पूजन के काज, मेरो जनम सफल भयो आज।
पूजा करके नवाऊँ शीष, मुझ अप.राध क्षमहुँ जग.दीश।।

सुख देना दुख मेटना, यही तुम्हा–री बान।
मुझ गरीब की वी.नती, सुन लीज्यो भग.वान्।।

पूजन करते देव का, आदि–मध्य–अवसान।
सुरग–न के सुख भोग–कर, पावै मोक्ष–निदान।।

जैसी महिमा तुम विषैं, और धरै नहिं कोय।
जो सूरज में जोति है, नहिं तारा–गण होय।।

नाथ तिहा–रे नाम तैं, अघ छिन–माहिं पलाय।
ज्यों दिन–कर–पर.काश तैं, अन्ध–कार वि–नशाय।।

बहुत प्रशंसा क्या करूँ, मैं प्रभु बहुत–अ.जान।
पूजा–विधि जानूँ नहीं, शरण राखि भग.वान्।।

यहाँ पर नौ बार णमोकार.मन्त्र जपना चाहिए।

आरती श्री पार्श्व–नाथ स्वामी

जय पारस जय पारस, जय पारस देवा
माता थारी वामा देवी, पिता अश्वसेवा
काशी जी में जन्म लिया था, हो देवों के देवा
आप तेईसवें हो तीर्थंकर, भक्तों को सुख देवा
पाँचों पाप मिटाकर हमने, शरण लही जिन देवा
दूजा और कोई ना दीखे, जो पार लगावे खेवा
नव–युवक मंडल बना रहे, जो करे आपकी सेवा
विषय विकार मिटाओ मन का, अरज सुनो जिन देवा
हम भी शरण तुम्हारी आये, हाथ जोड़–कर शीश नवाये
हमें भी दो प्रभु, भक्ती की मेवा

आरती श्री पार्श्वनाथ जी

ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा |
सुर नर मुनिजन तुम चरणन की, करते नित सेवा |
पौष वदी ग्यारस काशी में, आनंद अतिभारी-2,
अश्वसेन वामा माता उर-2, लीनो अवतारी | ॐ जय पारस देवा |
श्यामवरण नवहस्त काय पग, उरग लखन सोहें-2,
सुरकृत अति अनुपम पा भूषण-2, सबका मन मोहें | ॐ जय पारस देवा |
जलते देख नाग नागिन को, मंत्र नवकार दिया-2,
हरा कमठ का मान ज्ञान का-2, भानु प्रकाश किया | ॐ जय पारस देवा |
मात पिता तुम स्वामी मेरे, आस करूँ किसकी-2,
तुम बिन दाता और न कोई-2, शरण गहूँ जिसकी | ॐ जय पारस देवा |
तुम परमातम तुम अध्यातम, तुम अंतर्यामी-2,
स्वर्ग-मोक्ष के दाता तुम हो-2, त्रिभुवन के स्वामी | ॐ जय पारस देवा |
दीनबंधु दु:खहरण जिनेश्वर, तुम ही हो मेरे-2,
दो शिवधाम को वास दास-2, हम द्वार खड़े तेरे | ॐ जय पारस देवा |
विपद-विकार मिटाओ मन का, अर्ज सुनो दाता-2,
सेवक द्वै-कर जोड़ प्रभु के-2, चरणों चित लाता | ॐ जय पारस देवा |
ॐ जय पारस देवा, स्वामी जय पारस देवा |
सुर नर मुनिजन तुम चरणन की, करते नित सेवा |

आरती श्री वर्द्धमान स्वामी

करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ।
राग बिना सब जगजन तारे, द्वेष बिना सब कर्म विदारे ॥
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥

शील धुरंधर शिव तिय भोगी, मन वच कायनि कहिये योगी ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥
रत्नत्रय निधि, परिग्रह.हारी, ज्ञानसुधा.भोजनव्रतधारी ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥

लोकालोक व्यापे निजमाँहीं, सुखमय इंद्रिय सुख दु:ख नाहीं ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥
पंचकल्याणक पूज्य विरागी, विमल दिगंबर अंबर त्यागी ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥

गुनमणि भूषण भूषित स्वामी, जगत् उदास जगंतर नामी ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥
कहें कहाँ लों तुम सब जानो, 'द्यानत' की अभिलाष प्रमाणो ।
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥

करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ।
राग बिना सब जगजन तारे, द्वेष बिना सब कर्म विदारे ॥
करूं आरती वर्द्धमान की,पावापुर निरवान थान की ॥
पावापुर निरवान थान की ॥

आरती श्री पंच परमेष्ठी

इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे

पहली आरति श्रीजिनराजा, भव दधि पार उतार जिहाजा।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

दूसरी आरति सिद्धन केरी, सुमिरन करत मिटे भव फेरी।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

तीजी आरति सूरि मुनिंदा, जनम मरन दुःख दूर करिंदा।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

चौथी आरति श्री उवझाया, दर्शन देखत पाप पलाया।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

पाँचमि आरति साधु तिहारी, कुमति विनाशन शिव अधिकारी।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

छट्ठी ग्यारह प्रतिमाधारी, श्रावक वंदूं आनंदकारी।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

सातमि आरति श्रीजिनवानी, 'द्यानत' सुरग मुकति सुखदानी।
इह विधि मंगल आरति कीजे, पंच परमपद भज सुख लीजे।

तुभ्यं नमस्.त्रि.भुवना.र्ति–हराय नाथ! तुभ्यं नमः क्षिति–तला.मल–भूषणाय।
तुभ्यं नमस्.त्रि.जगतः परमे.श्वराय, तुभ्यं नमो जिन! भवो.दधि–शोषणाय ।।26।।